{8.}

पंचदेव

ज ग दी श प्र सा द म ण्ड ल सा हि त्य

सं. उमेश मण्डल

पंचदेव

पंचदेव

(जगदीश प्रसाद मण्डल साहित्य)

सं. उमेश मण्डल



पल्लवी प्रकाशन

निर्मली

ISBN : 978-93-87675-85-4

दाम : ₹49/-
सर्वाधिकार © श्री जगदीश प्रसाद मण्डल
पहिल संस्करण : 2018

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल) बिहार : 847452

PANCHDEO : 8
Compilation by Umesh Mandal of Select Maithili Stories of Shri. Jagdish Prasad Mandal.

ऐ पोथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। प्रकाशक अथवा कॉपीराइट धारकक लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवं रिकॉडिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहि कएल जा सकैत अछि।

दू शब्द

पाँच गोट कथाक सङ्कलन, तँए पोथीक नाओं 'पंचदेव' राखल गेल अछि। 'पंचदेव'क एकसाए संग्रह अछि जे एकसंग प्रकाशित भऽ रहल अछि। साएओ संग्रहक कथा सभ श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संसारसँ सङ्कलित कएल गेल अछि। मण्डलजी मैथिली-मिथिलाक ओहन रचनाकार छैथ, जनिक रचनामे वर्त्तमान अछि, यथार्थ अछि। तँए, भाषा-साहित्यक दुनियाँमे मण्डलजीकेँ सभठाम जानल-मानल जा रहल अछि।

मैथिली साहित्यमे उत्कृष्ठ रचना तथा जीवन्त भाषाक प्रयोग हेतु मैथिली साहित्यक एकल अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार- 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड' श्री जगदीश प्रसाद मण्डलेजीकेँ प्रदान कएल गेलैन। तैसंग 'यात्री सम्मान', 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'विदेह बाल-साहित्य पुरस्कार', 'वैदेह सम्मान', तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सेहो सम्मानित छैथ। श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक आइ धरिक (4 अक्टुबर 2018) कथा सभकेँ सङ्कलन करैत बेहद प्रसन्नता भऽ रहल अछि। ऐ हेतु कथाकारक आभारी छी।

संगे, आदरणीय श्री मन्त्रेश्वर झा, डॉ. शिवशंकर 'श्रीनिवास', श्री रबीन्द्र नारायण मिश्र आ गजेन्द्र सर (श्री गजेन्द्र ठाकुर)जीक आभारी छी.! जनिक मार्ग दर्शन पाबि किछु-किछु कए रहल छी।

क्रमश: प्रो. धीरेन्द्र कुमार, डॉ. शिकुमार प्रसाद, श्री ओम प्रकाश झा, श्री कपिलेश्वर राउत, श्री राजदेव मण्डल आ श्री दुर्गानन्द मण्डलजीक सेहो आभारी छी।

ऐ साएओ पोथीक रचनाकेँ पुस्तकाकार रूप देबए-मे श्री नन्द विलास राय, श्री राम विलास साहु आ श्रीमती पुनम मण्डलक भरपूर सहयोग भेटल, ई सभकियो प्रसंशाक प्रात्र छैथ। हिनका सबहक प्रति हम आभार प्रकट कए रहल छी। तैसंग, पूरक सहयोगीमे अपन तीनू सन्तान क्रमश: पल्लवी, तुलसी आ मानबक चर्च करब सेहो आवश्यक बुझि रहल छी। तीनू बच्चाकेँ धन्यवाद-आशीर्वाद।

आइ-काल्हिक भागम-भागकेँ देखैत अपने लोकनिक सुविधा लेल छोट-छोट पोथीमे श्री मण्डलजी-रचित छोट-पैघ सभ तरहक कथाकेँ जोड़ियेलौं हेन। आशा अछि अपने लोकैनकेँ नीक लागत। सादर...।

उमेश मण्डल

निर्मली

24 नवम्वर 2018

कथाक सत्तैर-

पटियाबला

जेठ मास, दिनक तीन बजैत। देखैमे रातिसँ बहुत नमहर दिन बनैत मुदा जहिना कायाक संग माया आ रौदक संग छाया चलिते रहैए तहिना नमहर दिनक संग धूपो एते बढ़ि-चढ़ि जाइत अछि जे श्रमशक्तिक दौड़मे मझोलको दिनसँ छोट बनि जाइए। सुरूजक शक्तिवाण एते उग्र रूप पकैड़ लैत अछि जे धरतियो ताबा जकाँ तबैध आगि उगलैपर उताहुल भऽ जाइए। धरती-अकासक बीच लुलुआएल लू एक-ताले बाधमे नाचए लगैए। जेना राम-रावणक बीच वा महाभारतक सतरहम दिन भेल तहिना आ तेहने तीरसँ बेधित सुलेमान बेहोश भेल ओइ चिड़ै जकाँ श्यामसुनरक दरबज्जापर आबि दाबामे साइकिल ओंगठा ओसारक भुइयेँपर चारूनाल चीत खसि पड़ल। खसिते आँखि मूना गेलइ। जहिना बन्न आखि साँस चलैत अधमरूक होइत तहिना सुलेमान बेहोश छल।

श्यामसुनरकेँ बेरूका तीन बजेक चाह पीबैक अभ्यास छैन। बगलक घरक ओसारपर चाह बनबैत रहैथ तँए साइकिलक खड़खड़ाएबसँ नै परेख सकला जे वाण लगल बाझ जकाँ कियो छैथ। साइकिलक बात समान्य तँए समुद्र उपछबसँ नीक जे जइ काजमे हाथ लागल अछि, ओकरा पूरा ली। सएह केलैन। चाह पीबैत श्यामसुनर दरबज्जापर अबिते देखलैन जे ई अधमरू भेल के छिआ? मुँह निहारलैन

तँ चिन्हल चेहरा सुलेमानक!

आँखि बन्न, कुहरैत मनबलाक तँ बोलियो अ-स्पष्टे जकाँ भऽ जाइ छै, तँए बाल-बोध वा पशु जकाँ दुख बुझब कठिन भऽ जाइत, तथापि छाती थीर करैत श्यामसुनर टोकलखिन-

"सुलेमान भाय, सुलेमान भाय?"

पानिक तहक अवाज जहिना ऊपर नइ अबैत, मुदा पानिक ऊपरक अवाज कम्पित होइत, लहैरिक अनुकूल तेतए धरि जाइत जेतए ओ पूर्ण थिर नै भऽ जाइत। मुदा कोनो उत्तर अबैसँ पहिनहि श्यामसुनरकेँ मन पड़ि गेलैन भिनसुरका अवाज- 'पटिया लेब पटिया, पटिया लेब पटिया।'

लगले मनकेँ नअ घन्टा उचैट कहलकैन- 'भरिसक रौदक चोट आ मेहनतक मारिसँ सुलेमान एते बेथा गेल अछि जे आँखि खोलैक साहस नहि भऽ रहल छइ!

तैबीच चिन्हल दरबज्जा आ चिन्हार बोली अकाइन करोट फेरैत अधखिल्लू आँखि उठा सुलेमान बाजल-

"श्याम भाय, केकर मुँह देख घरसँ निकललौं जे एको पाइक बोहैन नै भेल। उधार-पुधार ऐ उमेरमे खाएब नीक नै बुझै छी, करखन छी करखन नहि, केकरो खा कऽ मरब तँ कोसत। जलखै खा कऽ जे निकललौं, सएह छी। खाली पेटमे पानियोँ भोंकबे करै छै किने। पेटमे बगहा लगैए!"

सुलेमानक बात सुनि श्यामसुनरकेँ भेलैन जे भरिसक एकरे बिलाइ कुदब कहै छइ। भुखाएल बिलाइ जहिना छटपटाइत अपनो बच्चाकेँ कण्ठ चभैले तैयार हुअ लगैत तहिना भरिसक होइत हेतइ! मुदा रोगो तँ असान नहि, एक संग केते तीर लागल छैन। कोनो घुट्ठीमे तँ कोनो बाँहिमे, कोनो छातीमे तँ कोनो माथमे। भूख-पियास, थकान इत्यादिसँ बेधल छैथ! तोसैत श्यामसुनर कहलखिन-

“सुलेमान भाय, आँखि नीक नहाँति खोलू। एक्के कप चाह बनौने छेलौं जे आँइठ भऽ गेल अछि। बाजू पहिने चाह पीब आकि खेनाइ खाएब?”

पाश भरल बातमे आस लगबैत सुलेमान बाजल-

“भाय, ऐ घरकेँ कहियो दोसराक बुझलौं जे कोनो बात बजैमे संकोच हएत। देहमे तेते दर्द भऽ रहल अछि जे कनी पीठपर चढ़ि खुनि दिअ पहिने, तखन बुझल जेतइ।”

साए घरक जुलाहा परिवार गोधनपुरमे। झंझारपुरसँ पूब सुखेत पंचायतक गाम गोधनपुर। जैठाम मरदे-मौगीए मिलि बिछानक कारोबार करैए। गाम-गामसँ मोथी कीनि, अपनेसँ सोनक डोरी बाँटि बिछान बीनि, उत्तरमे अंधरा ठाढ़ी, दछिन घनश्यामपुर, पूब घोघरडीहा आ पच्छिममे मेंहथ-कोठिया-रैमा धरिक बजार बना कारोबार करैए। ओना, जुलाहा खाली गोधनपुरेटा मे नहि आनो-आनो गाममे अछि मुदा बिछानक कारोबार गोधनपुरेटा मे होइत। शहर-बाजरमे जहिना रंग-बिरंगक वस्तु-जात बिकाइत तहिना गामो-समाजक बजारमे चलैए। जइमे रंग-बिरंगक वस्तु-जातक बिकरी-बट्टा होइए। किछु वस्तुगत अछि आ किछु भावगत।

साइयो परिवार अपन-अपन क्षेत्र बनौने अछि। सभ दिन सभकियो भिनसरे जेर बना-बना निकैल जाइए। ओना, कहियोकाल सुलेमानो जेरेमे निकलैत रहए मुदा आइ असगरे निकलल छल। अपनामे सीमाक अतिक्रमण करबो करैत आ नहियोँ करैत। खुल्ला बजार तँ वएह ने टिकाउ होइत जे बिसवासू वस्तुक बिकरी करए। नइ तँ घटिया माल आ बेसी दाममे वस्तुक बिकरी हएत। मुदा गोधनपुरक पटियाबलामे से नहि, एकरंगाह वस्तु एकरंगाहे दाममे बेचैत।

पीठसँ घुट्ठी धरि जखन श्यामसुनर दस बेर बुलला तखन सुलेमान

पड़ले-पड़ल बाजल-

"भाय, आब उतैर जाउ। एह, अरे बाप रे! ओइ जिनगीसँ घुरलौं। मन हल्लुक भेल।"

कहि फुरफुरा कऽ उठि बैसैत बाजल-

"भाय, अचेत जकाँ भऽ गेल छेलौं। आँखि चोन्हिया गेल छेलए। सौंसे अन्हारे बुझि पड़ए लगल छेलए। ई तँ रच्छ रहल जे दरबज्जाक पैछला देबालक ठेकान रहल, नहि तँ केतए वौआ कऽ मरितौं तेकर ठीक नहि।"

श्यामसुनर सुलेमानक बातो सुनैत आ मने-मन विचारबो करैत जे हो-न-हो दरबज्जापर मरि जाइत तँ मुँहदुस्सी चिड़ै जकाँ लोक केना मुँह दुसैत तेकर कोनो ठीक नहि। जैठाम घरपर चिड़ै बैसने घरक सभ किछु चलि जाइत अछि तैठाम आइ हमरा संगे की होइत! मुदा जइ दुर्गतिक दुर्गपर सुलेमान पहुँच गेल छल ओइठाम मनुखक मनुखपना केहेन होइ, ईहो तँ एक प्रश्न अछि।

सत्तैर-पचहत्तैर बर्खक सुलेमान सभ दिन पचास किलो मीटर बिछानक बोझ लऽ कऽ टहैल बेचि जीविकोपार्जन करैत अछि, ओहनकेँ की कहल जाए। जे खून-पसीना एकबट्ट कऽ जीब रहल अछि ओकर अन्तिम बोलो कियो परिवारक सुनि पबितै..?

श्यामसुनरक मन ठमैक गेलैन। ठमैकते बजला-

"सुलेमान भाय, आब केहेन मन लगैए, किछु खाइ-पीबैक इच्छा होइए?"

मुस्की दैत सुलेमान बाजल-

"भाय, आब जीब गेलौं। आब खेबे करब किने। किछु दिन औरो दुनियाँक खेल-बेल देख लेब।"

जहिना गुड़ घाक टनक जेते बहैसँ पहिने रहैत अछि आ मुँह बनि निकैलते किछु बेसिया जाइत मुदा खिल–मूल–निकलला पछाइत जहिना सुआस पड़ए लगै छै, जइसँ रूप बदैल जाइ छै, पाशा आस लगबए लगै छै, तहिना सुलेमान बाजल-

“भाय, सरेलहा भात-रोटी खाइक मन नै होइए।”

“तखन?”

“टटका जँ गहुमक चारिटा रोटी भऽ जाइत तँ मन तिरपित भऽ जइत। ताबे नहा सेहो लेब।”

सुलेमानक बात सुनि श्यामसुनर बजला-

“कल देखल अछि? बाल्टीन-लोटा आनि दइ छी, नीक नहाँति नहा लेब।”

श्यामसुनरक बात सुनि हँसैत सुलेमान बाजल-

“भाय, एना किए बजै छी। पचासो दिन पानि पीने हएब आ केतेको दिन नहेने हएब, तखन कल देखल नै रहत। लोटा-बाल्टीन कथीले आनब, आँगनमे काज हएत। हम सभ तरहक लूरि रखने छी ठाढ़े-ठाढ़ वा बैस कऽ सेहो नहा लइ छी आ जँ सासुर-समधियौर गेलौं तँ लोटो-बाल्टीन लऽ कऽ नहा लेलौं। ओना, भाय की कहूँ लोको सभ अजीब-अजीब अछि। ने माल-जाल जकाँ नाँगैर छै आ ने मनुखपना छइ। एक दिन अहिना रौदमे मन तबैध गेल रहए। एक गोरेक दरबज्जापर कल देखलिऐ, साइकिल अड़का नहाइले गेलौं। मन भेल पहिने चारि घोंट पानि पीब ली। तही बीच एकटा झोंटहा आबि झटहा फेकलक जे कल छुबा जाएत!”

सुलेमानक बात सुनि श्यामसुनरक मनमे वाल्मीकि आबि गेलैन। तमसा नदीक तटपर वाण लगल क्रोंच पक्षीपर नजैर गेलैन। मुदा अपनाकेँ सम्हारैत बजला-

"अहूँ सुलेमान भाय कोन खिस्सा भुखाएलमे पसारै छी। झब-दे नहाउ, आँगनमे ताबे रोटी बनबबै छी।"

सुलेमान कल दिस आ श्यामसुनर आँगन दिस बढ़ला। जहिना भोजनक पूर्व स्नानसँ खुशी होइत तहिना खुशी होइत सुलेमान कल दिस बढ़ला। मुदा श्यामसुनरक मनमे प्रश्न-पर-प्रश्न उठए लगलैन। पहिल प्रश्न उठलैन जे मृत्यु-सज्जापर पड़ल यात्रीकेँ वा फाँसीपर चढ़ैत यात्रीकेँ पुछि भोजन देल जाइत अछि। अपना मुहेँ सुलेमान कहलक जे गहुमक रोटी खाएब। बिनु मेजनक गहुमक रोटी ओहने होइत जेहेन डम्हाएल मालदह आम। जँ सोझहे रोटी कहैत तँ मरूआ रोटीक मेजन अचार, पिआजु, नून-मिरचाय, तेल सेहो होइत, मुदा टटका गहुमक रोटी केहेन हएत? सभकेँ अपन-अपन प्रेमी होइ छइ। जँ से नइ होइ छै तँ जुड़शीतलमे अरबा चाउरक बसिया भात-ले पहिने लोक तरूआ-भुजुआ किए बना लइए? मुदा तँए कि मोटका चाउरक बसिया भातक प्रेमी नून-पिआजु-अँचार नै हेतइ। मुदा जेते जल्दिवाजीक जरूरत अछि–जल्दिवाजी ई जे भुखाएल पेट, स्नानक पछाइत दोसर रूप पकड़ैत–तइमे रसदार तरकारी बनाएब संभव नहि, तँए दूटा घेरा पका चटनी आ रोटीसँ काज चलि सकैए। सएह केलैन।

स्नान कएल नोतहारी जकाँ दरबज्जापर अबिते सुलेमानक भुखाएल मन प्रेमी भोजनक बाट ताकए लगल।

आगूमे थारी देखते सुलेमानक मन सौनक सुहावन जकाँ हरैष उठल। रोटीक पहिल टुक चटनीक संग मुँहमे अबिते दँतिया कऽ दाँत पकैड़ जीह रस चूसए लगल। रस पबिते बिहुसैत सुलेमान बाजल-

"भाय, दुनियाँमे केतौ किछु ने छइ। छै सबटा अपना मनमे। जाबे आँखि तकै छी ताबे बड़ बढ़ियाँ, आँखि मुनिते दुनियाँ धिया-पुताक खेल जकाँ उसैर जाइ छइ। अपने मुइने सृष्टिक लोप भऽ जाइ छइ।"

सुलेमानक गंभीर विचार सुनि श्यामसुनरक मनमे उठलैन जे भोजैत जँ भोजहैरिक रसगर बात सुनै छै तँ ओ आरो बेसी आनन्दित होइ छइ। मुदा अपन बात तँ बिनु प्रश्न पुछने नै हएत। द्वैतमे दुनियाँ हेराएल छइ। बाढ़ि आएल धार जकाँ केतए-सँ-केतए भँसिया जाएत तेकर ठेकान रहत...। श्यामसुनर बजला-

"सुलेमान भाय, ऐ उमेरमे एते भारी काज किए करै छी?"

श्यामसुनरक प्रश्न सुनि सुलेमान विह्वल भऽ गेल। जिनगीक हारल सिपाही जकाँ तरसैत बाजल-

"भाय, जखन अहाँ घरक बात पुछिये देलौं तखन किए ने सभ बात कहिये दी।"

सुलेमानक बात सुनि श्यामसुनर बुझि गेला जे बरियातीक भोज हुअ चाहैत अछि, से नहि तँ चरिया दिऐन-

"सुलेमान भाय, कहने छेलौं जे गरम-गरम रोटी खाएब सराएल नै खाएब आ अपने गपक पाछू सरबै छी?"

श्यामसुनरक बात सुनि हाँइ-हाँइ दूटा रोटी आ अदहा चटनी खा एक घोंट पानि पीब सुलेमान बाजल-

"भाय, माए-बापक बड़ दुलारू बेटा छेलिऐ। खाइ-पीबैक कोनो दुख-तकलीफ परिवारमे नै रहए। कपड़ाक कारोबार छल। चरखा चलबैसँ लऽ कऽ खादी भंडारसँ हाट धरिक कारोबार छल।"

श्यामसुनरक मनमे उठलैन- मोबाइल, टी.बी, कम्प्यूटर, कपड़ा, जूतासँ घर भरल रहै छै मुदा सबुरक केतौ ठेकान नहि। भरि पेट अन्न नहि, फटलो वस्त्र नहि, मुदा छुच्छहो घरमे सबुर केना फड़ि जाइ छै! सुलेमानक परिवारिक जिनगीक ललिचगर गप सुनि श्यामसुनर जिज्ञासा केलैन-

"ओ कारोबार किए छोड़ि देलिऐ। मेहनतो आ आमदोक खियालसँ

तँ नीके छेलए?”

अपन बामा हाथसँ चानि ठोकैत सुलेमान बाजल-

“गाम-गामक बाबू-भैया सभ गरीबक कारखाना उजाड़ि देलक। खादी भंडारकेँ लूटि लेलक। छुच्छे हाथे की करितौं।”

फेर जिज्ञासा करैत श्यामसुनर पुछलखिन-

“कोन-कोन तरहक कपड़ा बनबै छेलिऐ?”

सुलेमान-

“पहिरन वस्त्रसँ लऽ कऽ ओढ़ैक सलगा धरि बनबै छेलिऐ।”

डुमैत नाव देख जहिना नैया निराश भऽ जाइत जे जँ जिनगी बँचियो जाएत तँ जीब केना, तहिना सुलेमानक तरसैत मन काँपए लगल।

बातकेँ समटैत श्यामसुनर बजला-

“ई तँ धिया-पुताक खेल भेल, जाए दियौ।”

श्यामसुनर सुलेमानकेँ तँ कहि देलखिन ‘जाए दियौ’ मुदा अपन मन ठमकलैन। काजक रूपमे समाज बँटल अछि। ओइ काजक लूरि तँ ओकरा-ले सुरक्षित छइ। जँ कागजी ज्ञानक अभावो रहतै आ विकसित बेवहारिक ज्ञान देल जाइत तँ की घर-घर पाठशाला नै बनैत? जरूरत छल समयानुकूल ओकरा बनबैक। से नै भेल।

तेसर रोटी खाइत सुलेमान बाजल-

“भेल तँ सएह, मुदा परिवार बिलैट गेल।”

परिवारक बिलटब सुनि श्यामसुनर आगू बढ़ि पुछलखिन-

“अपन परिवारक कारोबार मरि गेला पछाइत की केलिऐ?”

श्यामसुनरक प्रश्न सुनि उत्साहित होइत सुलेमान बाजल-

“की केलिऐ! हमरो जुआनीक उठाइन रहए। मनमे अरोपि लेलौं जे

दुनियाँमे केतौसँ कमा कऽ परिवार जीवित रखबे करब।”

सुलेमानक संकल्पित बात सुनि वाह-वाही दैत श्यामसुनर पुछलखिन-

“दोसर कोन काज केलिऐ?”

“गाम-गामक कपड़ा बुननिहार बम्बइ चलि गेलिऐ।”

“बम्बइमे केतए?”

“भिवंडी। भिवंडीमे लूम चलै छइ। ओइमे कपड़ा बुनाइ होइ छइ। गमैया लूरि तँ रहबे करए, लगले नोकरी भऽ गेल। ओना, मजदूरी रेट कम रहइ मुदा काजक माप सेहो रहइ। जेते करब तेते हएत। जुआन-जहान रहबे करी दिनकेँ ने दिन आ ने रातिकेँ राति बुझिऐ। खूब कमेलौं।”

श्यामसुनर-

“तखन ओकरा किए छोड़ि देलिऐ?”

श्यामसुनरक बात सुनि सुलेमानकेँ ओहिना भेलैन जहिना चोटेपर दोहरा-तेहरा कऽ चोट लगलासँ होइत। कुम्हलाएल फूल जकाँ मुँह मलिन आ ठोरमे फुरफुरी आबए लगलैन नमहर साँस छोड़ैत बाजल-

“भाय, चारि साल खूब कमेलौं, पाँचम साल बिहारी-मराठीक हल्ला उठल। हल्ले नै उठल केतेकेँ जानो गेल, केतेकेँ बहु-बेटी छिनाएल, केतेकेँ कमाइ लूटाएल। सभ किछु छोड़ि जान बँचा गाम आबि गेलौं।”

तैपर श्यामसुनर फेर पुछलखिन-

“गाममे आबि फेर की केलिऐ?”

सुलेमान-

“तेही दिनसँ पटियाक ई कारोबार शुरू केलौं। सभ परानी लागल रहै छी, घीचि-तीड़ि कऽ कहुना दिन बीतबै छी।”

श्यामसुनर-

“सुलेमान भाय, हम ई नै कहब जे अहाँ नै काज करू, मुदा काजक ओकाति तँ देखए पड़त किने। कहुना-कहुना तँ चालीस-पचास किलोमीटर साइकिल चलैबते हेबइ?”

“हँ से ने किए चलबैत हएब। आब की ओ कोस रहल जे घन्टामे कोस चलैमे लगै छल।”

मुड़ी डोलबैत श्यामसुनर बजला-

“एक तँ ओहिना शरीर ढील भऽ रहल अछि तैपर साइकिल चलबै छी। तेतबे नहि, हो-न-हो केतौ रस्ता-पेरामे खसिये-तसिये पड़ब आ हाथ-पएर टुटि जाएत तँ के देखत?”

एक तँ सुलेमानक जरल मन ठण्ढाएल तैपर सँ परिवार-ले हाथ-पएर टुटब सुनि बाजल-

“भाय, केतबो अन्हारमे अनचिन्हार लोक ढेरिया किए ने गेल, मुदा हमहूँ तँ कोनो समाजक लोक छी तँए सभ समाज अपन-अपन धर्मक पालन करैए। तहूमे हम तँ चिन्हार छी, गोटे-गोटे अनठा कऽ आगू बढ़ि जाएत मुदा सभ तेहने तँ नहियेँ अछि। तहूमे जागल लोककेँ थोड़े विनाश होइ छइ।”

सुलेमानक जागल बात सुनि श्यामसुनर ठमकला। मन कहलकैन-बात तँ बड़ सुन्दर अछि मुदा जागलक की अर्थ सुलेमान बुझैए, से बिनु जनने बात नै बुझि सकब। एक्के चीजक नाओं-शब्द ढेर अछि, नाओंक संग काज जुड़ल अछि। तैठाम बिनु पुछने काज नै चलत। पुछलखिन-

“भाय, जागल केकरा कहै छिऐ?”

जेना सुलेमानकेँ रटले रहै तहिना धाँइ-दे बाजल-

“भाय, जखन आँखि मूनल देखै छिऐ तँ बुझि जाइ छिऐ जे सूतल अछि आ आँखि तकैत रहैए तँ बुझि जाइ छिऐ जे जागल अछि।”

फेर 'ताकब' आ 'मुनब'क ओझरी श्यामसुनरकेँ लगलैन। मुदा ओझरीमे नै पड़ि आगू बढ़ैत पुछलखिन-

"केते गोरेक परिवार अछि?"

सुलेमान कहलकैन-

"अछि तँ बहुत मुदा चारू बेटीकेँ सासुर बसने अखन तीनियेँ गोरेक अछि।"

श्यामसुनर पुछलखिन-

"बेटासँ ने किए ई काज करबै छी, ओ तँ जुआन हएत?"

बेटाक नाओं सुनि सुलेमान विह्वल भऽ गेल। जेना केतौ सुख-दुख दुनू बहिन गाड़ा-जोड़ी कऽ सामाक गीत गबैत होइ तहिना सुलेमान बाजल-

"भाय, उमेरक ढलानेमे बेटा भेल। सभसँ छोट अछि। ओकरो दू अक्षर नै पढ़ा देबै, तँ लोक की कहत?"

'लोक लाज' सुनि श्यामसुनर हेरा गेला। एहनो जिनगीमे लोक-लाज जीवित अछि! बिहुसैत पुछलखिन-

"मन लगा कऽ पढ़ैए किने?"

केकरा मनक बात ऐ युगमे के कहत। सभ अपने बेथे बेथाएल अछि। सुलेमान बाजल-

"भाय, से तँ ओकरे मन कहतै जे मन लगा कऽ पढ़ै छी आकि मन उड़ा कऽ पढ़ै छी।"

"अहाँ की देखै छिऐ?"

"हम तँ अपना धंधामे लगल रहै छी। तखन केना देखबै?"

"संगी-साथी सभ कहैत हएत किने?"

"हँ, से तँ कहैए जे जाइए पढ़ैले आ चलि जाइए सिनेमा देखए,

मैच देखए।”

“परीछामे पास करैए किने?”

“हँ से तँ ढौऔ-कौड़ी लगने पास कइए जाइए।”

“तब तँ आशा अछि?”

“हँ, से तँ ओकरेपर टक लगौने छी। जँ कहीं नोकरी भेलै तँ दिने बदैल जाएत।”

बेटाक बात छोड़ि श्यामसुनर पत्नी-दे पुछलखिन-

“घरवाली की सभ करै छैथ?”

पत्नीक नाओं सुनि सुलेमान पसिज गेल। मनमे उठलै- आब कि पत्नी ओ पत्नी रहल। संगे-संग चलबैवाली, काँट-कुशक परवाह केने बिना करवनो गुरुक काज करैवाली, तँ करवनो संगीक, करवनो प्रेमीक! जिनगीक अन्तिम क्षण धरि रहैक प्रतिज्ञा..! बाजल-

“भाय, कहुना कऽ बुढ़िया भानस भात कऽ लइए। बेचारी दम्मासँ पीड़ित अछि!”

“इलाज किए ने करा दइ छिऐन?”

“गरीब घरक लोकक इलाज की हेतइ। जेते पथ होइ छै तइसँ बेसी कुपथे भऽ जाइ छइ। तखन तँ चाहै छी जे बेचारी पहिने मरए।”

‘पहिने मरए’ सुनि श्यामसुनर पुछलखिन-

“से किए?”

“एतेटा जिनगीक सभ कमाइ लूटा जाएत, जखन हम मरि जेबै आ ओइ बेचारीक भीखक कलंक लागत।”

सुलेमानक बात सुनि श्यामसुनर गुम भऽ गेला। किछु फूरबे ने करैन। सुलेमानक चेहरा दिस तकैत रहला। जेना आश्चर्यमे श्यामसुनर पड़ि गेला तहिना। किछुकालक पछाइत कहलखिन-

“आइ रहि जाउ। काल्हि एम्हरेसँ बेचैत-बिकनैत चलि जाएब।”

तैपर हँसैत सुलेमान बाजल-

“भाय, जेना आइ एको पाइ बोहैन नै भेल तेना नीके हएत। मुदा, बिमरयाह घरवालीकेँ एक नजैर नै देख लेब से केहेन हएत।”

❑ साभार : उलबा चाउर

रिक्साबला

"ओ रिक्सा, ओ रिक्सा।"

कनी फरिक्केसँ जीबछ जोरसँ बाजल।

हाथमे बम्बैया बैग, जिन्स पेन्ट आ शर्ट पहिरने, दहिना हाथमे चौड़गर घड़ी। फुल जुत्ता, मौजा सेहो लगौने। बम्बैए हिप्पी कट केश, बुच्चा मोछ आ आँखिपर चश्मा। रिक्साबला-बचनू अपन ताशक संगीक संग ताश खेलैत। ताशो ओहिना नइ खेलैत, एक सेटपर चारू गोरेक चाह-पानक खर्च, हारलाहा पार्टीकेँ देबए पड़ैत। पाँचटा लाल ;बचनूक जोड़ाकेँ, तँए एक्केटा सेठ होइमे बाँकी। मात्र एकटा लाल हएत, चाह-पानक जोगार लगि जाएत। तँए एकाग्र भऽ बचनू लालक पाछू दिमाग लगौने। ..ताशक चौखरी लग आबि जीबछ दुइभेपर बैग रखि रूमालसँ मुँह लग होंकए लगल। कनी काल होंकि रिक्साबलाकेँ चरियबैत कहलक-

"हौ भाय, हमरा बहुत दूर जाइक अछि, झब-दे चलह?"

ताशपर सँ नजैर उठा, जीबछ दिस देख बचनू बाजल-

"भाय, केहेन सुन्दर ठण्ढा छै, कनी सुसता लएह। तोरो देखै छिअ जे पसीनासँ तर-बत्तर भेल छह। हमरो एक्केटा लाल बाँकी अछि, दू-तीन

खेपमे भइये जाएत। अगर जँ अपन लाल नहियोँ हएत आ विरोधीए-केँ दूटा कारी भऽ जेतै तैयो जीत हेबे करत।"

बचनूक बात सुनि जीबछ शर्टो आ गंजियो निकालि कऽ रौदमे पसाइर देलक। आसिन मास। तीख रौद। तैपर सँ गुमकी सेहो। रेलबे स्टेशनसँ जीबछ पएरे आएल। किएक तँ स्टेशनक बगलेमे तेहेन हच्चा बाढ़िमे बनि गेल जे रिक्सो आ टमटमोक रस्ता बन्न भऽ गेलइ। पएरे लोक कहुना-कहुना थाल-पानिमे टपैए। बाढ़ि तँ तेहेन आएल छेलै जे जँ स्टेशन ऊँचगर जमीनपर नै रहैत तँ ओहो भँसि कऽ केतए-कहाँ चलि जाइत। मुदा तैयो स्टेशनक पुबरिया गुमती, पुल आ आध किलोमीटर रेलबे लाइन दहाइए गेल। तैसंग, रेलबेक दच्छिन तेहेन मोइन फोड़ि देलकै जे गाड़ियो बन्न भऽ गेल। डेढ़ मासमे पुलो बनल आ गाड़ियो चलब शुरू भेल।

भरि गाममे बचनूए-टाकेँ रिक्सा। जइसँ कोनो तरहक प्रतियोगिता नहि। प्रतियोगिता तँ शहर-बजारमे होइए, जैठाम सैंकड़ो-हजारो रिक्सा अछि। अनेरो रिक्साबला सभ रिक्सापर बैस, एमहरसँ ओमहर घुमबैत बजैत रहैए-

"कोट-कचहरी.., बैंक.., पोस्ट ऑफिस.., कौलेज.., स्कूल.., स्टेशन.., बस स्टेण्ड.., अस्पताल.., बड़ा बजार.., सिनेमा चौक.., डाकबंगला.., भगत सिंह चौक.., अजाद चौक...।"

मुदा से तँ गाममे नहि। तँए कि गामक रिक्साबलाकेँ कमाइ नइ होइए? खूब होइए। एक तँ गामक कच्ची रस्ता, तैपर सँ जेतए-तेतए टुटलो आ गहुम पटौनिहार सभ कटनौं। एहेन सड़कमे दोसर कोन इंजनबला सवारी सकत, तँए गामक सवारी रिक्सा। जइसँ गामक बेटी-पुतोहुक बिदागरी निमहैत। ..धैनवाद तँ रिक्शेबलाकेँ दी जे वेचारा छातीपर भार उठा, करवनो चढ़ि कऽ तँ करवनो उतैर कऽ पार लगबैत कठिन मेहनतक पाइ कमाइत। अरवन धरि ताशक खेल नै फरियाएल।

किएक तँ करवनो लाल कमि जाए तँ करवनो कारी। ..धड़फड़ाइत जीबछ फेर बाजल-

“भाय, ताश नै फरियेतह। बहुत दूर जाइक अछि, झब-दे चलह। नहि तँ अन्हार भेने तोरो दिक्कत हेतह आ हमरो अबेर भऽ जाएत। कहुना-कहुना तँ ऐठामसँ सुग्गापट्टी पाँच कोस हएत।”

बचनू-

“हँ, से तँ पाँच कोससँ कम नहियेँ हएत। मुदा तइसँ की। ई की कोनो शहर-बजार छिऐ जे रातिक कोन बात जे दिने देखार पौकेटमारी, डकैती, अपहरण होइ छइ। ने रस्तामे भीड़-भड़क्का आ ने कोनो चीजक डर। निचेनसँ जाएब।”

गामक बीचमे चौबट्टी। जैठाम पान-सातटा छोट-छोट दोकान। जइसँ गामोक आ आनो गामक लोक चौक कहए लगल। चौकक पछबरिया कोणपर एकटा खूब झमटगर पाखैरक गाछ अछि जैपर हजारो चिड़ैक खोँता छइ। दिन भरि चिड़ै सभ चराउर करए बाहर जाइत आ गोसाँइ निच्चाँ होइते पतियानी लगा-लगा गाछपर आबए लगैत। केतेको रंगक चिड़ै, तँए सभ जातिक चिड़ै अपन-अपन संगोर बना-बना अबैत। तेतबे नहि, गाछक डारियो बाँटि नेने अछि। जहिना एक जातिक चिड़ै एक डारिपर खोँता बनौने अछि तहिना दोसर-तेसर दोसर-तेसर डारिपर। तँए एक जातिक चिड़ैसँ दोसर जातिक चिड़ैक बीच ने कहा-कही होइत आ ने झगड़ा-झंझट। ओना, अपनामे एक जातिक बीच नीक-अधलाक गप-सप्प जरूर होइ। कथा-कुटुमैतीसँ लऽ कऽ रामायण-महाभारतक खिस्सा-पिहानी सेहो होइ। तैसंग पान-पुनक चर्चा सेहो करैत आ अधला काज केनिहारकेँ डाँटो-फटकार दैत आ जुरिमनो करैत। ..ओही गाछक निच्चाँमे बाटो-बटोही रौदमे ठण्ढाइत आ पानि-बुनीमे सेहो जान बँचबैत आ ताशक चौखरी सेहो जमबैत।

बचनूक बात सुनि जीबछ पेन्टक पैछला पौकेटसँ सिगरेटक डिब्बा आ सलाइ निकाललक। एकटा सिगरेट अपनो लेलक आ एकटा बचनूओंकेँ देलक। दुनू गोरे सिगरेट लगा, रिक्सापर चढ़ि विदा भेल। कनीए आगू बढ़ल कि बचनू जीबछकेँ पुछलक-

"भाय तूँ बम्बैमे रहै छह?"

"हँ"

"मन तँ हमरो बहू-दिनसँ होइए मुदा पलखैते ने होइए जे जाएब।"

"ओइठीम मन तँ खूब लगैत हेतह?"

"एँह भाय मन! की कहबह! जखैने डेरासँ निकलबह आकि रंग-बिरंगक छौड़ी सभकेँ देखबहक। उमेरगरो सभ जे कपड़ा लगौने रहतह से देखबहक तँ बुझि पड़तह जे कुमारिये अछि। मुदा छौड़ो सभ की ओइसँ कम अछि। एक तँ ओहिना छौड़ी सभ दामी-दामी कपड़ा पहिरने अछि आ सौंसे देह झक-झक करै छइ। तैपर सँ छौड़ो सभ करीक्का चश्मा पहिर लेतह आ निंगहारि-निंगहारि देखैत रहतह। चश्मो की कोनो एक्की-दुक्की रहै छइ। जखैने आँखिमे लगेबह आकि देहपर कपड़ा बुझिए ने पड़तह।"

"ओहेन चश्मा हमरा सभ दिस कहाँ छै, हौ।"

"एँह, ओइठीन विदेशी चश्मा सभ बिकाइ छै किने। देहातमे ओहेन चश्मा के कीनत।"

चौकसँ कनीए उत्तर एकटा ताड़ीक दोकान। चारि-पाँच कट्ठाक खजुरबोनी। बीच-बीचमे ताड़क गाछ सेहो। उतरे-दछिने रस्ता। पछबारि भाग ताड़ी दोकान। ताड़ी दोकान देख जीबछ बचनूक पीठमे आँगुरसँ इशारा करैत रोकैले कहलक। बचनूकेँ मनमे भेलै, भरिसक पेशाब करत। रिक्सा रोकि उतैर गेल। जीबछ बाजल-

"भाय, ताड़ी दोकान देखै छिऐ। चलह दू घोंट मारि दिऐ, तहन चलब। हमहीं पैयो देबइ।"

ताड़ीक नाओं सुनि बचनू कहलक-

"ओना, ताड़ी हमहूँ पीबै छी मुदा ताड़ी पीब कऽ ने रिक्सा चलबै छी आ ने ताड़ी पीनिहारकेँ रिक्सापर चढ़बै छी। तँए अखन ताड़ी-दारू बन्न करह। जहन घरपर पहुँचबह तहन जे मन हुअ से करिहह।"

"भाय, ओतए भेटत की नइ भेटत, अखन तँ आगूमे अछि।"

"तब अखन नै जाह। ताड़ी कीनि कऽ नेने चलह। गामेपर दुनू गोरे पीब लेब आ रातिमे रहि जैहह।"

"ऐठाम केतए रहब?"

"किए, हमरा घर-दुआर नै अछि। ओतै रहि कऽ राति बिता लिहह। भोरे पहुँचा देबह।"

"अच्छा, ठीक छै, चलह।"

दुनू गोरे ताड़ी दोकान दिस बढ़ल। दोकान लग पहुँचते जीबछ घैलक-घैल ताड़ी फेनाइत देखलक। घैलक पतियानी देख मने-मन सोचए लगल जे अपना होइ छेलए जे शहरे-बजारक लोक ताड़ी पीबैए। मुदा से नहि, गामो-घरक लोक खूब पीबैए।

पच्चीस-तीस गोरे दोकानक भीतरो आ बाहरो ताड़क पातक चटाइपर बैस ताड़ियो पिबैत आ चखनो खाइत। कियो-कियो असगरे पिबैत आ कियो-कियो दू-दू, तीन-तीन, चारि-चारि गोरेक संगोरमे, कियो खिस्सा कहैत, तँ कियो गीत गबैत आ कियो अन्ना-गाहिंस गारिये पढ़ैत। सभ उमंगमे। जहिना ताड़ीक फेन उधियाइत तहिना सबहक मन। ..ताड़ीक खटाइन गन्ध लगिते जीबछकेँ होइ जे करवन दू गिलास चढ़ा दिऐ।

ताड़ी दोकानसँ कनी हटि दूटा बुढ़िया चखनाक दोकान पसारने। एकटा दोकानमे मुरही, घुघनी, कचड़ी आ दोसरमे चारि पाँच रंगक माछक तरूआ। ओंगरीक इशारासँ मझोलका डाबा देखबैत जीबछ

बचनूकेँ कहलक-

“भाय, दुइए गोरे पीनिहार छी, तँए यएह डाबा लऽ लएह।”

बचनू-

“पहिने दाम पुछि लहक?”

डाबाक कान पकैड़ जीबछ पासीकेँ दाम पुछलक। तोड़-जोड़ करैत पैंतीस रूपैआमे पटलै। पेन्टक जेबीसँ नमरी निकालि जीबछ देलक। नमरी पकड़ैत दोकानदार बाजल-

“ताड़ीए टाक दाम कटै छिअ। डाबा घुमा दिहह।”

“बड़बढ़ियाँ।”

कहि बचनू डाबा उठा लेलक। डाबाकेँ चखना दोकानक आगूमे रखि बचनू मने-मन सोचए लगल जे औझुका तँ कमाइयो ने भेल। धिया-पुता की खाएत। से नहि तँ तेना कऽ मुरही-कचड़ी कीनि ली जे सभ तूरकेँ भऽ जाएत।

जेहने झुर कचड़ी बनौने तेहने माछक कुटिया। एकदम लाल-बुन्द। माछक कुटिया देख जीबछकेँ मुँहमे पानि आबए लगलै। मन चटपटाए लगलै। बचनूकेँ कहलक-

“भाय, केते चखना लेबह?”

मने-मन बचनू हिसाब जोड़ए लगल। दू-दूटा कचड़ी आ दू-दूटा माछ दुनू बच्चा-ले आ अपना सभ-ले चारि-चारिटा। किएक तँ गरम चीज होइ छै, तँए बेसी अपकारे करत...। बाजल-

“भाय, एक किलो मुरही, एक किलो घुघनी, सोलहटा कचड़ी आ सोलहटा माछक कुटिया लऽ लएह।”

सएह केलक। ताड़ीक डाबा उठा जीबछ विदा भेल। रिक्सा लग आबि बचनू चखनाबला मोटरी सेहो जीबछेकेँ दऽ देलक।

चौकक रस्ता छोड़ि बचनू घर दिसक रस्ता धेलक। घरो लगेमे। दुइए हन्नाक घर बचनूकेँ। रिक्सा रखैले एकचारी भनसे घरक पँजरामे देने। एकटा घरमे भानसो करए आ जरनो-काठी राखए। दोसरमे सभतूर सुतबो करए आ चीजो-बौस राखए। अपना दरबज्जा नहि। मुदा घरक आगूमे दस धूरक परती, जैपर सरकारी चबुतरा बनौल। ..घर लग अबिते बचनू रिक्सा ठाढ़ कऽ बाढ़ैन आनए आँगन गेल। बचनूकेँ देख घरवाली कहलकै-

“आइ जे भाड़ा नै कमेलौं, तँ राति खएब की? अपना दुनू गोरे तँ ओहुना सुति रहब मुदा बच्चा सभ केना रहत?”

बिनु किछु उत्तर देनहि बचनू बाढ़ैन लऽ अँगनासँ निकैल गेल। चबुतराकेँ दोहरा कऽ बहारलक। चबुतराक बनाबट सुन्दर तँए बहारिते चमकए लगल। चबुतराक चमकी देख जीबछ बाजल-

“भाय, जेहने मजगूत चबुतरा छह तेहने सुन्दरो, संगमरमर जकाँ चमकै छह।”

जीबछक बात सुनि बचनूकेँ ओ दिन मन पड़लै जइ दिन ठीकेदारकेँ गरियौने रहए। मुस्कियाइत बाजल-

“भाय, ओहिना एहेन सुन्दर बनल अछि। जे ठीकेदार बनबैक ठीकेदारी नेने रहए ओ नमरी चोर। तीन नम्बर ईंटा आ कोसीकातक बालुसँ बनबए चाहैत रहए। हम गामपर नै रही। जहन एलौं तँ देखलिऐ। देखते सौंसे देह आगि लगि गेल। मुदा ऐठाम रहए कियो ने। दोसर दिन न्यौँ कोरए ठीकेदारो आ जनो आएल। हमरा तँ गरमी चढ़ले रहए। जखने कोदारि लगौलक कि जनक हाथसँ कोदारि छीनि ठीकेदारकेँ गरियाबए लगलौं। जहाँ गारि पढ़लिऐ आकि ठीकेदारो गहुमन साँप जकाँ हुहुआ कऽ उठल। जहाँ ओ जोरसँ बाजल आकि हमहूँ गरिऐबते दुनू हाथे कोदारिक बेंट पकैड़ कहलिऐ, ‘सार न्यौँ लइसँ पहिने तोरे काटि देबह।’

मुदा सभ पकैड़ लेलक। डरे ठीकेदारो थरथर कँपए लगल। तहन जा कऽ एक नम्मर सभ किछु, ईंटा-सिमटी-बाउल आनि बनौलक।”

जीबछ बाजल-

“बाह!”

बचनू-

“कनी ऊपर आबि कऽ देखहक जे की सभ बनबौने छी। देखहक ई खेलाइले पच्चीसी घर छी, कौड़ीसँ खेलाएल जाइए। मुदा ई खेल समैया छी। एकर चलती खाली आसिनेटा मे रहैए। कोजगरा दिन तँ लोक भरि राति खेलते रहैए।”

दोसरकेँ देखबैत-

“ई मुगल पैठानक घर छी। हमरा गाममे लोक एकरा ‘मुगल-पैठान’ कहै छै मुदा आन-आन गाममे एकरा ‘कौआ-ठुट्ठी’ कहै छइ। गोटीसँ खेलाएल जाइए।”

तेसर घर देखबैत-

“आ ई बच्चा सबहक छिऐ। एकरा ‘चैरखी-चैरखी’ घर कहैए। झुटकासँ खेलल जाइए।”

जीबछ बाजल-

“हौ भाय, तूँ तँ बड़ खेलौड़िया बुझि पड़ै छह।”

बचनू-

“हौ, जिनगीमे आउर छै की? खाइत-पिबैत, हँसी-चौल करैत बिता ली। सभ दिन कमेनाइ, सभ दिन खेनाइ। कोनो हर-हर-खट-खट नहि। धिया-पुताले तँ हम अपने स्कूल खोलि देने छिऐ। खेती-पथारीक काजसँ लऽ कऽ रिक्सा चलौनाइ, ईंटा बनौनाइ सभ लूरि हमरा अछि। धिया-पुता तँ देखिए-कऽ सीखि लेत।”

ओना, जीबछ बचनूक गपो सुनैत मुदा मन ताड़ीक खटाइन गन्धपर अँटकल। होइ जे कखन दू गिलास चढ़ाएब। नहि तँ कम-सँ-कम आँगुरमे भीरा नाकक दुनू पुड़ामे लगा ली। ..तैबीच जीबछकेँ बचनू कहलक-

“भाय, ताबे तूँ सभ किछु सेरियाबह, हम घरमे रिक्सा रखि दइ छिऐ। काजसँ निचेन भऽ जाएब।”

जीबछ सभ समान सेरियाबए लगल। रिक्साकेँ गुड़कौने बचनू एकचारीमे रखि आँगन जा दुनू बच्चो आ पत्नियोकेँ कहलक-

“दुनू बाटियो आ दुनू छिपलियो नेने चलू।”

कहि बचनू आगू बढ़ि गेल। पत्नीक मन खुशीसँ झूमि उठल। दुनू बच्चा दुनू बाटी नेने आगू बढ़ल। दुनू छिपली नेने पत्नी डेढ़िया लग ठाढ़ भऽ मुँहपर नुआ नेने कनडेरिये आँखिए दुनूकेँ देखैत। ..अपना दुनू गोरे-ले बचनू चारि-चारिटा तड़ल माछक कुटिया आ चारि-चारिटा कचड़ी आ तैसंग अदहा किलो करीब मुरही-घुघनी मिला कऽ रखि, दुनू बच्चाकेँ एक-एक कचड़ी, एक-एक माछक कुटिया आ दू-दू मुट्ठी मुरही-घुघनी मिला कऽ देलक। दुनू बच्चा देख कऽ चपचपा गेल। अपन-अपन बाटी बामा हाथे उठा दहिना हाथे खाइत विदा भेल। माए लग पहुँच दुनू बच्चा अपन-अपन बाटी देखए देलक। बाटीमे घुघनी-टुकड़ीबला मिरचाइकेँ देख माए कहलकै-

“बौआ, मिरचाइ बीछि कऽ रखि लिहँ, कड़ू लगतौ।”

तैबीच बचनू गमछाक एक भागमे मुरही-घुघनीकेँ मिला, चारि-चारिटा कचड़ी आ चारि-चारिटा माछक कुटिया फुटा, दुनू गोरे-ले रखलक। चबुतरेपर सँ बचनू घरवालीकेँ हाक पाड़ैत बाजल-

“ई सभ लऽ जाउ।”

अदहा मुँह झँपने बचनूक सरधा चबुतरापर पहुँच दुनू छिपली

बचनूक आगूमे रखि देलक। एकटा छिपलीमे मुरही कचड़ी आ दोसरमे घुघनी-माछ बचनू दऽ देलक। झुर माछक तरूआ देख सरधाक मन हँसए लगलै। मनमे एलै, कौल्हुका जलखै तकक ओरियान भऽ गेल। दुनू छिपली तरा-ऊपरी रखि दुनू हाथसँ छिपली उठा आँगन विदा भेल।

एमहर जीबछ आ बचनू दुनू भाग बैस बीचमे ताड़ीक डाबा, गिलास आ चखना रखलक। दुनू गिलासमे जीबछ ताड़ी ढारि, आगूमे रखि आँखि मूनि कऽ ठोर पटपटबैत मंत्र पढ़ए लगल। कनी काल मंत्र पढ़ि, आँखि खोलि तीन बेर ताड़ीमे आँगुर डुबा निच्चाँमे झाड़ि बाजल-

"हुअ भाय, आब हुअह।"

छगाएल दुनू, तँए एक लगाइते तीन-तीन गिलास पीब लेलक। मन शान्त भेलइ। शान्त होइते जीबछ सिगरेट निकालि एकटा अपनो लेलक आ एकटा बचनूओंकेँ हाथमे देलकै। दुनू गोरे सिगरेट धड़ा पीबए लगल। पिबैत-पिबैत दुनूकेँ निशाँ चढ़ए लगल। निशाँ चढ़िते गप-सप्प करैक मन हुअ लगलै। एक मुट्ठी मुरही आ एक टुकड़ी माछ लऽ जीबछ मुँहमे लेलक। बचनूओं लेलक। मुँह महक घोंटि जीबछ बाजल-

"भाय, तोरा रिक्सा चला कऽ परिवार चलि जाइ छह?"

कचड़ी तोड़ि मुँहमे लैत बचनू उत्तर देलक-

"किए ने चलत। हमरा की कोनो कोठा बनबैक अछि जे गुजर नै चलत। तहूमे की हम रिक्सा बारहो मास थोड़बे चलबै छी। भरि बरसात चलबै छी। जहाँ बर्खा बन्न भेलै आकि महाकान्त भाइक चिमनीमे काज करै छी।"

"नोकरियो करै छहक?"

"एहेन नोकरी तँ भगवान सभकेँ देथुन। अलबेला लोक छैथ महाकान्त भाय। हुनकर खाली पूजीटा छिऐन। असली कारोबारी हम दू गोरे छी। सरूप मुनसी आ हम। पजेबाक खरीद-बिकरीसँ लऽ कऽ

कोइला मंगौनाइ, ओकर हिसाब-बारी केनाइ हुनकर काज छिऐन आ हमर काज पथेड़ीक देखभाल केनाइ, समयपर दमकल चला खाधिमे पानि देनाइसँ लऽ कऽ बजारसँ समान कीनि कऽ अननाइ आ चिमनीपर सँ घरपर दौग-बरहा केनाइ धरि हमर।"

"तब तँ खूब कमाइ होइत हेतह?"

"कमाइ जँ करए चाही तँ ठीके खूब हएत। मुदा से नइ करै छी। एक साए रूपैआ रोज होइए। ओ घरवालीक हाथमे दऽ दइ छिऐ। बाँकी खेलौं-पीलौं। किएक तँ नजाइज पाइ जँ घरमे देबै तँ ओइसँ भाभन्स नै हएत।"

दुनू गोरे डबो भरि ताड़ियो पीब गेल आ चखनो खा लेलक। ..एक दिस निशाँसँ दुनूक देह भँसियाइत, दोसर दिस जोरसँ पेशाब लगि गेलइ। उठैक मने ने होइ। मुदा पेशाबो जोरे होइत गेलइ। दुनू गोरे उठि कऽ पेशाब करए गेल। जाबे पेशाब करैले बैसै-बैसै ताबे बुझि पड़ै जे कपड़ेमे भऽ जाएत। मुदा कहुना-कहुना कऽ सम्हारि पेशाब करए बैसल। पेशाब बन्ने ने होइ। बड़ी कालक पछाइत पेशाबो बन्न भेलै आ भक्को खुजलै।

चबुतरापर दुनू गोरे आबि कऽ बैसल। बैसते जीबछ बाजल-

"भाय, हमरा डान्स करैक मन होइए।"

जीबछक बात सुनि बचनू पल्था मारि बैस, ठेहुनपर दुनू हाथसँ बजबए लगल। मुदा ओइसँ अवाज नै निकलै, अवाज निकलै मुहसँ। जहिना-जहिना मुहसँ बोल निकलै तहिना-तहिना दुनू ठेहुनपर हाथ चलबै। तैबीच दुनू बच्चो चबुतरापर आबि थोपड़ी बजबए लगल। अँगनाक मुहथैरपर सरधो बैस कऽ देखए लगली। जीबछ डान्स करए लगल। थोड़े कालक पछाइत बचनूक मुँह दुखा गेलइ। मुदा जीबछ डान्स करिते रहल आ दुनू बच्चो थोपड़ी बजैबते रहल। जहिना बाढ़िक रेतपर हेलिनिहार चीत गरे सुति केतौ-सँ-केतौ भँसिया कऽ चलि जाइत तहिना

बैसल-बैसल सरधाक मन भँसियाइत रहैन। तैबीच बचनू उठि कऽ आँगन गेल आ घैलची परहक घैल उठा, पानि फेक नेने आबि उल्टा कऽ रखि, दुनू हाथे घैलक पेनपर बजबए लगल। आँगुरमे औंठी रहबे करइ, लाजवाब बाजा। ..नचैत-बजबैत दुनू गोरे थाकि गेल। सुति रहल।

भोर होइते दुनू गोरे उठि, मुँह-हाथ धोइ रिक्सा लऽ विदा भेल।

ऐ बेर आसिन अपन चालि बदैल लेलक। किएक तँ आन साल अधहा आसिनक पछाइत हथिया नक्षत्र चढ़ै छल से ऐ बेर नइ भेल। पहिने हथिये चढ़ल। दू दिन हथिया बीतला पछाइत आसिन चढ़ल। ओना, बुढ़-बुढ़ानुसक कहब छैन जे दुर्गापूजामे हथिया पड़िते अछि, मुदा से नइ भेलइ। आसिनक इजोरिया परवक परीवकेँ दुर्गा पूजा शुरू होइत, जइमे हथियो नक्षत्र रहैत। ऐ बेर अमाबसिये दिन हथिया चलि गेल। तहिना बर्खोक भेल। जइ दिन आसिन चढ़ल ओइ दिन घनघनौआ बर्खा भेल आ तेकर पछाइत फुहियो ने पड़ल। झाँटक कोन गप। हथिया-ले ओरियौल जरनो-काठी आ अनो-पानि सबहक घरमे रहिए गेल। मुदा तैयो किसान सबहक मनमे खुशी नै कमल। किएक तँ जँ हथियामे धानक खेतमे ठेंगाक हूर गड़त तँ धान हेबे करत। मुदा किछु गोरेक मनमे शंका जरूर होइ जे निचला खेतमे ने पानि लागल अछि मुदा ऊपरका खेतक धान केना फुटत? किएक तँ ऊपरका खेतक पानि टघैर कऽ निचला खेतमे चलि गेल। किछु खेतक पानि काँकोड़क बोहैर देने तँ किछु खेतक पानि मूसक बिल देने बहि गेल। जइसँ बर्खाक तेसरे दिन ऊपरका खेत सभ सुखि गेल। ओना, दशमीक मेलो देखनिहारक आ मेलामे दोकानो-केनिहारक मनमे खुशी। किएक तँ रूख-सुखमे नाचो-तमाशा जमत आ देखनिहारोक भीड़ जुटत। ओना, पैछला सालक सभ छगाएल। किएक तँ जइ दिन सतमी मेला शुरू भेलै ओही दिन तेहेन झाँट आ पानि भेलै जे मेलाक चुहचुहीए चलि गेलइ।

सुखार समय रहने महाकान्त ओछाइनेपर पड़ल-पड़ल सोचए

लगल। जहियासँ चिमनी शुरू केलौं तहियासँ एहेन समय नै पकड़ाएल छल। आन साल दियारीक पछाइत चिमनीक काजमे हाथ लगबै छेलौं, से ऐ बेर भगवान तकलैन। कहुना-कहुना तँ दियारी अबैत-अबैत दू खेप भट्ठा जरूर लागि जाएत। सरकारोक योजना नीक पकड़ाएत। एक दिस खरन्जाक स्कीम तँ दोसर दिस इन्दिरा आबासक घर। तेतबे नहि, स्कूल आ अस्पताल सेहो बनत। आ सेहो अपने गामटा मे बनत से नहि, आनो-आन गाममे बनत। सालो भरि ईंटाक महगीए रहत। ओते पुराइए ने पाएब। ..एते बात मनमे अबिते महाकान्तक मुहसँ हँसी निकलल। तखने पत्नी रागिणी बेड-टी नेने आबि चुप-चाप सिरमा दिस ठाढ़ भऽ पतिकेँ मुस्कियाइत देखली। पतिक मुस्की देख रागिणी मने-मन सोचए लगली, की बात छिऐ जे ओछाइनेपर पड़ल-पड़ल मुस्कुरा रहल छैथ। मुदा बिनु किछु बजनहि रागिणी टेबुलपर चाह रखि, ओरिया कऽ नाक पकैड़ डोला देलकैन। नाक डोलैबते महाकान्त उठि कऽ बैस रहला। आगूमे रागिणीकेँ ठाढ़ देख चौअन्नियाँ मुस्की दैत आँखिक इशारासँ पलंगपर बैसैले रागिणीकेँ कहलक। पतिक मूड देख रागिणी ससरिये जाएब नीक बुझली।

महाकान्त आ रागिणी, संगे-संग कौलेजमे पढ़ने। जहिए दुनू गोरे बी.ए.मे पढ़ै छल तहिए दुनूक बीच प्रेम भऽ गेल। दुनूक सम्पन्न परिवारक। ओना, पढ़ैमे दुनू ओते नीक नै जेते दुनूक रिजल्ट नीक होइ। दुनूकेँ मैट्रिको आ इन्टरोमे फस्ट डिविजन भेल रहइ। तेकर कारण मेहनत नहि पैरबी छल। नीक रिजल्ट दुआरे संगियो-साथीक बीच आ शिक्षकोक बीच दुनूक आदर होइत। दुनूक बीच सम्बन्ध बी.ए. आनर्सक क्लासमे भेलइ। किएक तँ आनर्समे कम विद्यार्थी रहने गप-सप्प करैक अधिक समय भेटइ। दुनूक बीच सम्बन्ध गप-सप्पसँ शुरू भेल। तेकर पछाइत किताबक लाथे डेरोमे एनाइ-गेनाइ शुरू भेल। सम्बन्ध बढ़िते गेलइ। संगे बजार बुलनाइ, किताब-कॉपी खरीदनाइसँ लऽ कऽ कपड़ा, जुत्ता-चप्पल

खरीदनाइ धरि संगे हुअ लगलै। पछाइत मेटनियोँ शोमे सिनेमा देखए लगल। जइसँ आंगिक सम्बन्ध सेहो शुरू भऽ गेलइ। एकटा डबल बेडक रूम लऽ दुनू गोरे डेरो एकठाम कऽ लेलक। दुनूक बीचक सम्बन्धक चर्चा खाली विद्यार्थीए आ शिक्षके धरि नै रहि दुनूक पिता धरि पहुँच गेल। मुदा दुनूक पिताक दू विचारक तँए बुझियो कऽ दुनू अनठा देलैन। ..महाकान्तक पिता सुधीर जुआन-जहानक खेल बुझैत तँ रागिणीक पिता रमानन्द सम्पन्न परिवार आ पढ़ल-लिखल लड़िका बुझि बेटीक भार उतरब बुझैथ।

एम.ए. पास केलापर दुनूक बिआह भऽ गेल। सुधीरक परिवार एक-पुरखिया। अपनो भैयारीमे असगरे आ बेटो तहिना। ओना, बेटी चारिटा जे सासुर बसैत रहैन। परिवारक काजसँ महाकान्तकेँ कम्मे सरोकार। तँए भरि-भरि दिन चौखरी लगा जुओ खेलैथ आ शराबो पिबैथ। जे पितो बुझैत रहैन। महाजनीक कारोबार, तँए भरि दिन सुधीर रूपैए-क हिसाब-बारी आ धनेक लेन-देनमे व्यस्त रहै छला।

..महाकान्तक क्रियाकलाप देख एक दिन खिसिया कऽ सुधीर कहलखिन-

“बौआ, बड़ कठिनसँ धन होइ छइ। एना जे भरि-भरि दिन वौआएल घुमै छह तइसँ कएक दिन लछमी रहथुहुन। किछु उद्यम करह।”

पिताक बात महाकान्त चुपचाप सुनि लेलक, किछु बाजल नहि। बेटाकेँ चुप देख फेर सुधीर बजला-

“पाँच लाख रूपैआ दइ छिअ, चिमनी चलाबह। उत्तरबरियो बाधमे अपन बीस बीघा ऊँच जमीन छहे, ओहीमे चिमनी बना लएह।”

“बड़बढ़ियाँ।”

कहि महाकान्तो चुप भऽ गेल। पिताक मनमे रहैन जे जखने

काजमे लगि जाएत तखने चालि-ढालि बदैल जेतइ। किएक तँ काज ओहेन कारखाना होइए जइमे मनुख पैदा लइत, मनुख मनुख बनैत।

आने साल जकाँ अपन काज बचनू करए लगल। पथेड़ीक देखभालसँ लऽ कऽ हाट-बजार आ महाकान्तक घरपर जा रागिणीकेँ ब्राण्डीक बोतल पहुँचबै धरि...।

महाकान्तो अपन आने साल जकाँ निअमित काज करए लगला। सबेरे आठ बजेमे जलखै खा मोटर साइकिलसँ चिमनीपर चलि अबैथ। चिमनीपर आबि तीनू गोरे–महाकान्त, सरूप, बचनू–भरि मन गाँजा पीबए। पीला पछाइत महाकान्त अपन कार्यालयमे सुति रहैथ। बारह बजेमे बचनू उठा दैन। उठिते महाकान्त मुनसीसँ रूपैआ मांगि बचनूकेँ ब्राण्डी किनैले बजार पठा अपने मुँह-हाथ धोइ खाइले घरपर विदा भऽ जाइथ। घरपर पहुँच धड़फड़ करैत खेनाइ खा पुन: घुमि कऽ चिमनीपर आबि सुति रहैथ, जे एक्केबेर चारि बजे उठैथ। बचनूओं बजारसँ शराब खरीद महाकान्तक घरपर जा रागिणीकेँ दऽ दइत...।

कौलेजे जिनगीसँ दुनू परानी–महाकान्त-रागिणी–शराब पिबैथ। ओना, रागिणी ब्राण्डीए-टा पिबथिन मुदा महाकान्त सभ किछु–गाँजा, भाँग, इंग्लिश, पलोथिन, अफीम, ताड़ी इत्यादि जखन जे भेटल तखन सएह।

आइ जखन बचनू ब्राण्डीक बोतल लऽ रागिणी लग पहुँचल तँ बचनूकेँ देखते रागिणीक नजैरमे नव विचार उपकलैन। आन दिन रागिणी बचनूसँ बोतल लऽ रखि लैत रहैथ, मुदा आइ आदरसँ बचनूकेँ हाथक इशारासँ पलंगेपर बैसैले कहलखिन। बचनू बैसल। दुनू आमने-सामने।

रागिणी बजली-

“बहुत दिनसँ मनमे छेलए जे अहाँसँ भरि मन गप करितौं। मुदा अहाँ तेते धड़फड़ाएल अबै छी जे किछु कहैक मौके ने भेटैए।”

बचनू-

“गिरहतनी, हम तँ मुरूख छी, अहाँ पढ़ल-लिखल छी। अहाँक गप्पक जवाब हमरा बुते थोड़े देल हएत।”

रागिणी-

“कोनो की हम अहाँसँ शास्त्रार्थ करब जे जवाब देल नै हएत। अपन मनक बेथा कहब। जे सभकेँ होइ छइ।”

मनक बेथा-दे सुनि बचनू मने-मन सोचए लगल जे हम सभ गरीब छी, हरिदम एकटा-ने-एकटा भूर फुटले रहैए। मुदा रागिणी तँ सभ तरहेँ सम्पन्न छैथ। नीक भोजन, नीक रहन-सहन तैसंग दुनू परानी पढल-लिखल.., तहन की मनमे बेथा छैन जे हमरा कहती। मुदा तैयो मनकेँ असथिर करैत बचनू रागिणी दिस देखए लगल। मनमे उत्सुकतो बढ़ैत रहइ। मुदा रागिणीक चेहरामे डुमैत सुरूज जकाँ मलिनता अबैत गेलइ।

रागिणी बजली-

“हमरासँ अहाँ बहुत नीक जिनगी जीबै छी।”

अपन प्रशंसा सुनि बचनू गदगद भऽ गेल। आँखि चौकन्ना हुअ लगलै। मनमे ओहेन-ओहेन विचार सेहो उपकए लगलै जेहेन आइ धरि कहियो ने आएल छेलइ। मुदा किछु बाजए नहि।

बचनूकेँ चौकन्ना होइत देख रागिणी बाजए लगली-

“जहिना अकासमे चिड़ैकेँ उड़ैत देखै छिऐ तहिना अहूँ छी। मुदा हम पिजरामे बन्न चिड़ै जकाँ छी। जखन पढ़ै छेलौं तखन यएह सोचै छेलौं जे कोनो कौलेजमे प्रोफेसर बनि जिनगी बिताएब मुदा से सभ मनेमे रहि गेल। भरि दिन अँगनामे घेराएल रहै छी। ने केकरोसँ कोनो गप-सप्प होइए आ ने अँगनासँ निकैल केतौ जा सकै छी। तहूमे असगरूआ परिवार अछि। लऽ दऽ कऽ सासुटा छैथ, ने दोसर दियादनी आ ने कियो तेसर। भरि दिन पलंगपर पड़ल-पड़ल देह-हाथ दुखा जाइए। जाधैर पढ़ै छेलौं

ताधैर दुनियाँ किछु आर बुझाइ छल। मुदा आब किछु आर बुझाइए। करवनो मन होइए तँ किछु पढ़ै छी नहि तँ टी.बी. देखैत रहै छी। पढ़िए कऽ की हएत। ने दोसरकेँ बुझा सकै छी आ ने अपना कोनो काज अछि, जइले सीखब। जानवरोसँ बत्तर जिनगी बनि गेल अछि। जहिना गाए-महींस भरि पेट खेलक आ खुट्टापर बान्हल रहल, तहिना भऽ गेल छिऐ। मुदा मनुख तँ मनुख छी। जाधैर अपना मनक बात दोसरकेँ नै कहत आ दोसरक पेटक बात नै सुनत ताधैर नीक थोड़े लगत। मनमे सदिखन उठैत रहैए जे जँ लकीरक फकीरे बनि जीबैक छइ तँ अनेरे लोक किए पढ़ैए।?"

सुखल मुस्की दैत बचनू बाजल-

"गिरहतनी, अहाँकेँ कोन चीजक कमी अछि जे कोनो तरहक दुख हएत।"

रागिणी-

"अहाँ जे कहलौं ओ ठीके। किएक तँ एहनो बुझनिहारक कमी नै अछि। एहनो बहुत लोक अछि जे धनेकेँ सभ किछु बुझैए। मुदा धन तँ खाली शरीरक भरण-पोषण कऽ सकैए, मनक नहि। तीन सालसँ बेसी ऐठाम एला भऽ गेल मुदा ने एक्कोटा सिनेमा देखलौं आ ने एक्को दिन केतौ घुमै-फिरैले गेलौं। जाधैर बेटी माए-बाप लग रहैए ताधैर सभ किछु माने धन-सम्पैत-कुटुम-परिवार इत्यादि अपन बुझि पड़ै छै, मुदा सासुर पएर दैते जहिना सभ बीरान भऽ जाइ छइ तहिना माए-बापक बीच जे अजादी बेटीकेँ रहै छै ओ सासुर एलापर एकाएक बन्न भऽ जाइ छइ।

बचनू-

"जँ केतौ जाइक मन होइए वा देखैक मन होइए तँ नैहर किए ने चलि जाइ छी?"

रागिणी-

"जहिना सासुर तहिना नैहरो भऽ गेल। जहिना सासुरमे पुतोहु बनि

जीबै छी तहिना नैहरोमे पाहुन बनि जाइ छी। जेना हम्मर किछु रहिते ने अछि। जे घर अप्पन नइ रहत ओइ घरमे केकरा कहबै जे हम फल्लाँ-ठाम जाएब। जन्म देनिहारि माइयो आने बुझैए। तैपर सँ भाए-भौजाइक जुइत...। ई तँ नैहरक गप कहलौं आ ऐठामक जे होइए से हमहीं बुझै छी। बुड़हा जहन आँगन औता तँ बुझि पड़त जे जेना अस्सी मन पानि पड़ल छैन। बुड़ही तँ कनी हँसियो कऽ गप्प करती मुदा हमरा देखिए-कऽ झड़कबाहि उठि जाइ छैन। जँ कहियो माथपर नुआ नइ देखलैन तँ बुढ़हीकेँ अगुआ की कहता की नहि, तेकर कोनो ठेकान नहि। पहाड़ी झरना जकाँ भरि-भरि दिन आँखिसँ नोर झहरैत रहैए। कियो पोछनिहार नहि।"

बचनू- "गिरहतनी, हमरा बड़ देरी भऽ गेल। महाकान्त भाय बिगड़ता।"

रागिणी- "अच्छा, चलि जाएब। कहै छेलौं, हरिदम तरे-तर मन औंढ़ मारैत रहैए जे लछमी बाइ जकाँ तलवार उठा परदा-पौसकेँ तोड़ि दी, मुदा साहस नै होइए। केराक भालैर जकाँ करेज डोलए लगैए। आइ जहन अपन मनक बात अहाँकेँ कहलौं तँ मन कनी हल्लुक बुझि पड़ैए।"

बचनू- "तहन तँ गिरहतनी हमहीं नीक छी।"

रागिणी-

"बहुत नीक। बहुत नीक। एते काल जे अहाँसँ गप केलौं से जहिना पाकल घाउक पीज निकललापर जे सुआस पड़ै छै तहिना भऽ रहल अछि। आब सभ दिन एक घन्टा गप्प कएल करब। अहाँ कियो आन छी, घरेक लोक छी।"

एक टकसँ जहिना बचनू रागिणीक आँखि-पर-आँखि दऽ हृदए देखए लगल, तहिना रागिणियोँ बचनूक हृदए पढ़ए लगली।

❑ साभार : गामक जिनगी

पसेनाक धरम

जहिना अंग्रेजक जून मास काल्हि समाप्त भेल तहिना अपन जेठ मास सेहो ओरानीपर आबि गेल। पैछला साल जे दुर्गापूजामे हथिया नक्षत्रक बर्खा भेल, तहियासँ एको बून पानि मेघसँ नै खसल। ओना, मघाइर बर्खा भेने जाड़ो किछु बेसियाइए जाइए, मुदा सेहो नहियेँ बेसियाएल। तइसँ जाड़क दुख तँ कनी कमबे कएल मुदा रब्बी-राइकेँ लाही चाटि गेल!

हथियाक पछाइत आठ माससँ अकास धरतीकेँ सरकारी राशन जकाँ पानि बन्न कऽ देलक। जइसँ रंग-रंगक विचार धरतीपर उठऽ लगल। कियो बजैत जे रौदी हएत, तँ कियो कहैत आगूसँ रौदी भेने थोड़े रौदी हएत आ जँ पाछूसँ मेघ फाटि बर्खो हुअए आ बाढ़ियो आबए तखन रौदी कहबै आकि दाही? तहिना कियो ईहो कहैत जे कालियो दास अखाढ़सँ बर्खा-मेघक आगमन मानै छैथ तखन रौदी केना भेल?

मुदा तेतबे थोड़े अछि, केम्हरो कमला पूजा तँ केम्हरो पानिक यज्ञ तँ केम्हरो रौदी भगबैले रामधुन-अष्टयाम-नवाह तँ केम्हरो मनुखदेवा गहवरमे पूजो अनधुन हुअ लगल।

जे भेल कि नइ भेल मुदा एते तँ भेबे कएल जे हथियाक बरिसल, माघक गुजरल फागुनक मोजर रौद आ पछिया हवामे तेना झड़कल जे आमे अलोपित भऽ गेल।

चारि बजे भोरेसँ शिवपूजन काका काजमे लगता तँए साढ़े तीनियेँ बजे नीन तोड़ि उठि, प्रभात कर्मसँ निवृत होइत चाह बना पीब घड़ीपर नजैर देलैन तँ चारि बजैत देखलैन। पत्नीकेँ सोर ऐ दुआरे पाड़लैन जे ओ जगि कऽ तैयार भेल छैथ कि नइ, मुदा सुगियो काकी पतिक कोठरीक खट-खुटक अवाज सुनि तैयार भऽ गेल छेली। तैयारो केना ने होइतैथ, काल्हि साँझूए पहर तीनू गोरे एकठाम बैस विचारि नेने छला जे पराते बीघो भरि खेतक चास लगाएब।

गोरहा खेत छी ओतबो जँ सम्हरि कऽ उपैज जाइए तँ बुतातक साल-माल लगिए जाइए। तहूमे कि आब लोक पहिलुका जकाँ दुनू साँझ भात खाइए, एकसंझू भेने अदहे साल ने भेल। जेठ अखाढ़क सीमा परहक समय छी, माघ मास थोड़े छी जे लोक आठ बजेक पछाइत काज दिस ताकत। अखैन तँ चारि बजे भोरेमे फरीच हुअ लगै छइ। काजक अनुकूल समय तँ बनियेँ जाइ छइ। तहूमे काजो नमहर अछिए। बीघा भरिक चास। एक दिस पहिने खेत पटत, तखन कदबा हएत तहिना दोसर दिस बीआ उखाड़ल जाएत, तखन ने कदबाक पछाइत रोपल जाएत। जेरगर जनकेँ जोड़ियबैयोमे समय लगिते अछि।

तेतबे किए! दमकलसँ पटौल जाएत, ट्रेक्टरसँ जोतल जाएत, दुनू लोहे-लक्कठ भेल, जँ कोनो पाट-पुर्जा गड़बड़ेतै तँ काजे रूकि जाएत।

ओना, सुगिया काकीकेँ बूझल रहैन जे अँगनाक काज पुतोहुक हाथे अपने सम्हारऽ पड़त। तेतबे नइ जँ कहीं पुरुख-पातर खेतेक काजमे ओझरा जेता तँ पानि-जलखै सेहो खेत पहुँचबऽ पड़त। तँए भोरेसँ जलखै-खेनाइक ओरियानक पाछू जारैन-काठीक व्योँत-बाँत मने-मन

सुगिया काकी करिते रहैथ तखने शिवपूजन काका पुछलखिन-

“बौआ उठल? चारि बजि गेल। घटही गाड़ी जकाँ जँ शुरूएमे लेट भेल तँ टीशने-टीशन लेट होइते जाएत।”

भिनसुरका समय तँए सुगिया काकीकेँ पतिक बोल नीक लगलैन। नीको केना ने लगितैन, कौआ जकाँ थोड़े पति बाजल रहैन, काग जकाँ कुचड़ल रहैन किने। मुदा काजक मोड़पर तेना सुगिया काकी पड़ि गेली जे किछु करैत किछु ने बनै छेलैन। मोड़ ई जे सोनेलाल खा-पी कऽ नबे बजे रातिमे पितासँ छिप कऽ ऑरकेस्ट्रा देखए चलि गेल छल जे पौने चारि बजे आपस आबि ओछाइनपर पड़ले छल कि उठबैक आदेश पतिक भेलैन। ओना, सुगिया काकीक अपनो मन घिरनी जकाँ नचैत जे चारि बजेमे दमकल चलत तखन ने कदबा बेरमे कदबा हएत आ रोपै बेरमे खेत रोपाएत। कहुना-कहुना तँ सात-आठ घन्टा खेत पटैमे लगत। एक तँ गोलगर खेत तैपर जेठुआ जरल सेहो अछि। तहूमे कि फूलक छीच्चा छी, आ कि तीमन-तरकारीक जैड़पनियाँ छी, कदबाक पटौनी छी किने, जइमे कहुना तँ भरि घुट्ठी पानि लगौल जाएत। तँए ओहो समय खिंचबे करत।

पत्नीक उत्तर नहि पाबि शिवपूजन काका कनी कड़ैक कऽ दोहरबैत बजला-

“की कहलौं, नइ सुनलिऐ?”

पतिक दहकैत अवाज सुनि सुगिया काकीक नजैर नचलैन। नचिते मनमे एलैन, एक दिस पति परिवारेक नीक-ले आफन तोड़ि रहला अछि, दोसर दिस ई छौड़बा किए भरि राति जागि कऽ गमा लेलक..!

..आब ओ सूतत आकि जगि कऽ काज सम्हारत। अखैन जे ओकरा उठबऽ जेबै तँ ढोँढ़ साँप जकाँ फुफकार छोड़त..! जँ नइ उठेबै तँ अपने आरो बेसी दहकता! ऐ परिस्थितिसँ निबटब केना..? परिस्थितिसँ वैचारिक दौड़मे निपटियो सकै छी मुदा काजक जे जाल पसैर गेल अछि,

माने रोपनिहारकेँ कहि देने छिऐ, जे अपन समांगक गलतीसँ ओकर काज बाधित हेतै! कहुना छी तँ पेट-बोनियाँ छी, भरि दिन थाल-पानिमे लेटाएत तखन जा कऽ बाल-बच्चाक संग दुनू साँझ खाएत। अपनो परिवारमे जेते जोड़ि-बन्हन कऽ नेने छी, माने दमकल चलैक ओरियान, खेत जोतैक ओरियानक संग जलखै-चाहक ओरियान, ओहो तँ राइए-छीती भऽ जाएत..!

..मने-मन साहस बटोरि सुगिया काकी सोनेलालक कोठरीक मुँह लग जा ठाढ़ भेली। केबाड़ बन्न रहने बाहरेसँ बजली-

“बौआ, बौआ सोनेलाल?”

कनी पहिने सूतल सोनेलालक मोनमे ओहिना ऑरकेस्ट्राक सीनो सभ आ गीतो-नाद नचिते रहै जइसँ नीन गहराएलो नहियेँ छेलइ। मुदा माइक बोलकेँ अनसुन करैत सोनेलाल हँ-हूँ किछु बजबे ने कएल। जइसँ सुगिया काकी केबाड़ लग ठाढ़ छेली। ने आगू ससैर पति लग जाइक साहस होइ छेलैन आ ने बेटाकेँ जोरसँ दबारि उठबैक साहस होइन। एक तँ ओहुना भोरुका समय छी, शीताएलमे केतौ अगियाएल दौड़ै... ।

..शिवपूजन काका पत्नीकेँ कहला पछाइत, पत्नीएपर नजैर रोपि लेलैन। रोपि ई लेलैन जे काजक दौड़मे जँ काजक सूत्र मनसँ ससैर जाएत तखन तँ काजो ओही लाथे ससरऽ लगत। जइसँ काज या तँ भरियाएत या ओझराएत। पत्नीक क्रिया-कलाप देख शिवपूजन कक्काक मन ठमैक गेलैन। जैठाम ठमकलैन तहीठाम ठाढ़ सेहो भऽ गेलैन। तँए मिसियो भरि आगू-पाछू नइ डोललैन। असथिर भेल दरबज्जाक मुँह लग ठाढ़ भेल पत्नीपर आँखि गड़ौने रहलैथ। मुदा नजैर घूमि कऽ काजक बीच सीमानपर आबि अँटैक गेलैन। अँटैक गेलैन ई जे कियो पसेना चुबा श्रम करैए आ कियो श्रमसँ छिटैक श्रमचोर बनि जाइए जे मेहनतक पसेनाक धरम नै बुझि, श्रमहीन बनि जाइए। एना किए एक्के मनक दुनू क्रिया भऽ

जाइए? क्रिया तँ कर्मक अनुकूल चलैत अछि, कर्म चलैत अछि विचारानुकूल, आ विचार चलैत अछि धर्म-धारणक अनुकूल। माने जे जेहेन जिनगीकेँ धरम बुझि धारण करैए...।

..मुदा लगले मन नाचि गेलैन जे पसेनाक धरम की? जहिना एक-बट्टी, दू-बट्टी, तीन-बट्टी, चरि-बट्टी, पँच-बट्टी लग पहुँच अपन जीवन यात्राक पथ जखन कियो देखए लगैए तखने ने देखैए जे पसेना तँ ओ शीतल बून छी जे कुवृत्तिकेँ धोइ जेते बढ़ैत जाइए से तेते धोइत-धुआइत अपन धरम धारण करैए। से कहाँ सोनेलालमे देख पाबि रहल छी? धिया-पुता जकाँ जेना कोनो धनियेँ-ढेकार ने छै, तहिना बुझि रहल अछि! जीबैले जीबैक उपाय सेहो तँ करए पड़ै छइ। से कहाँ देखैमे आबि रहल अछि..!

विचारैत-विचारैत शिवपूजन कक्काक मन अपन औझुका काजमे ओझरा गेलैन। ओझरा ई गेलैन जे जे गर्भे नाश भऽ जाएत ओकर जिनगीक आशा केते कएल जाए सकैए। फेर मन घुमलैन, जून मासक अन्त भऽ गेल, जइ बीआकेँ बीस-पचीस दिनक बीच रोपैक छल, ओ अदहा मइमे छीटने छेलौं, जेकरा आइ डेढ़ माससँ बेसी भऽ गेल, जे समय ओकर वृद्धिक छेलै, तइमे अदहा समय ओहिना चलि गेल। जाइक कारण भेल बर्खाक आशा-आशी देखब।

जहिना शिवपूजन काका दरबज्जाक मुँहपर ठाढ़ भेल घड़ी दिस देख-देख निराश भऽ रहल छला, तहिना सुगिया काकी सूतल बेटाकेँ देख-देख उतरीत भऽ रहल छेली। मुदा दुनूक मनक प्रश्न अन-उतरीत छेलैन। उतरीत तँ केला पछाइत भेलापर होइ छइ। निराशमे आस भरैत शिवपूजन काका सुगिया काकीकेँ कहलखिन-

“सोनेलाल सुतले अछि! चारि बजि गेल! अखैन जँ ओकरा चरिया कऽ नइ उठाएब तँ ओ सुतले रहि जाएत।”

अपन मनक बात खोलैत सुगिया काकी बजली-

“भरि राति अरकेस्ट्रा देखै छेलै, अखैन जँ उठेबो करबै तँ काजमे भकुआएले रहत।”

‘ऑरकेस्ट्रा’क नाओं सुनि शिवपूजन कक्काक मनमे उठलैन, अखन तँ खेती-बाड़ीक समय छी, कोनो उत्सवक समय तँ नहियेँ छी, अखुनका उत्सव तँ सभसँ पैघ खेती-बाड़ीक भेल। तहूमे काल्हि साँझूए पहर काजक सभ व्योँत लगा नेने छेलौं, तखन किए एना केलक। बजला-

“जखन औ काजक सभ व्योँत बूझल छेलै, तखन किए देखऽ गेल। जँ गेबो कएल तँ घन्टा-दू-घन्टा देखैत आ आबि कऽ सुति रहैत, जइसँ काजमे बिथुत नइ होइतै।”

मुदा सुगिया काकी चुपचाप पतिक बोल बेटा निविते सुनि रहल छेली। कोनो उत्तर नै छेलैन। छेलैन सिरिफ एतबे जे आँखिक ज्योति झूकल छेलैन।

❑ साभार : पसेनाक धरम

दूधबला

फगुआक समय। पीह-पाहसँ मौसमक रंग चढ़ि रहल छल। दिनुका काज उसारि नित्यानन्द काका दरबज्जापर बैस सालक फगुआक नीक-बेजापर ऊपर-निच्चाँ विचारि रहल छला। जाड़सँ गरमीक प्रवेश भऽ रहल अछि। ठाढ पानिकेँ इनहोराइ-ले ठण्ढ मारि तँ सिरसिसाइए पड़तै। जँ से नइ तँ इनहोराएत केना? मुदा तेहेन दोखाह दोरस हवा बहि गेल जे सोझ बाट माने नीक रस्ता बाउल-गरदासँ अन्हरा कऽ तेहेन बहबाँरि बनि रहल अछि जे भरि मुँह बाजब कठिन भेल जा रहल अछि।

सूर्यास्त तँ भऽ गेल मुदा अन्हराएल नै छेलइ। मोटर साइकिलसँ उतैर मनोहर नित्यानन्द काकाकेँ प्रणाम करैत आगूक चौकीपर बैसल।

किछु दिन पूर्व धरि नित्यानन्द काका मनोहरकेँ दूधबेच्चा बुझै छला, मुदा पनरह-बीस दिन पहिने शंका जगलैन से जगले रहि गेलैन। जइसँ विचार बदलए लगल छेलैन। मुदा कोनो विचारकेँ बदलैसँ पहिने ऊपर-निच्चाँ देख लेब जरूरी बुझि पुछलखिन-

“कारोबारक की हाल छह?”

नित्यानन्द कक्काक उत्तर दइसँ पहिने मनोहरक मनमे आएल जे जखन फगुआक सनेस अनने छिऐन तखन आगूमे रखैमे कोन लाज।

अनेरे 'साँइक नाओं सभ जानए आ हए-हए करए!' जुगोक तँ धर्म होइ छइ। के भँगखौका शराब नै पीबैए। ओ सभ तँ निशोकेँ पानि उताइर देने अछि। भाय जखन एकटा प्रेमी अछि तखन तँ जिनगी भरि प्रेम करू नइ तँ पुरुखक आँखिसँ गिरब ओते महत नै रखै छै जेते मौगीक आँखिसँ।

..मुदा अपनाकेँ सम्हारि विचारि लेब जरूरी बुझि बाजल-

"काका, आइक जुगमे दूध बेचने गुजर चलत, तखन तँ..?"

मनोहरक बात नित्यानन्द काकाकेँ ठहकलैन। मुदा तेयौ मन नै मानलकैन बजला-

"केते गोरे गाममे दूधबेच्चा छह?"

गर पाबि मनोहर बाजल-

"काका, आब कि कोनो गाइए-महींसिक दूध बिकाइए! आब तँ गाछसँ लऽ कऽ लोहा धरिक दूध बिकाइए। केतेक नाओं कहब। जेम्हरे देखै छी, तेम्हरे सएह।"

'सएह'क सह पाबि नित्यानन्द काका हूँहकारी भरलैन-

"से सएह।"

❑ साभार : बजन्ता-बुझन्ता

केना जीब?

सेवा निवृत्तिक सातम सालक सातम मास, सातम मासक सातम दिन, सात बजे साँझमे दू-जनियाँ सोफापर दुनू परानी प्रोफेसर शंकर कुमार ओंघराएल छला। दुनू बेकतीक मन खटाएल रहैन। दस बजेक करीब दिनेमे सुनने छला जे संगीक संगिनी चूल्हिक गैसक रिसावसँ झड़ैक अस्पतालक सीटपर चिकैर-चिकैर कानि रहल छैथ। सत्तैर बर्खक अवस्थामे संगी अपने दौग-धूप कऽ रहल छैथ! मुदा अस्पतालक डॉक्टर, नर्स आ कम्पाउण्डरो जी-जानसँ रोगीकेँ बँचबै पाछू लगल छथिन! तेकर कारण अछि जे एक तँ पाइक कमी नहि, आ दोसर पहुँचो नीके छैन। संगिनीक घटनाकेँ सरस्वती लगसँ तँ नइ देखने छेली मुदा समाचारक रूपमे सुनने छेली। सुनिते करेज तेना दहैल गेलैन जे साँसक गतिसँ छातीक धुकधुकी बढ़लैन ओ असथिरे ने भऽ रहल छेलैन। जेना नस-नसमे भयक भूत समा गेलैन। अन्हारक वाण जकाँ चारूकातसँ मृत्युक तीर बेधए लगलैन। जहिना वैरागी रागसँ डरैत आ जोगी भोगसँ तहिना मृत्युक भयसँ सरस्वती डरए लगली।

पाँच साए एम.एल.बला ह्विस्कीक बोतल प्रोफेसर शंकर कुमारकेँ बेअसर बुझि पड़लैन। मनक चिन्ता रूपी तीर ह्विस्कीक असरकेँ रस्तेमे रोकने छल। लग अबै ने दैन। कछ-मछ करैत शंकर पत्नीकेँ कहलखिन-

"एकबेर चाह... ।"

सरस्वतीक मन 'चाह' पीऐसँ सुरक्षित चूल्हि नै जराएब बुझैन। अपन आज्ञाक उल्लंघन होइत देख शंकरक मन महुराए लगलैन। जहिना भोज्य-पदार्थक बरतनमे गिरगिट खसि महुरबैत तहिना। बेअसर सरस्वतीकेँ देख डेग भरि पाछू घुसैक शंकर मुस्की दैत दोहरा कऽ बजला-

"चलू, हमहीं चाह बनाएब। कीचेनक तँ सभ किछु देखल नै अछि, खाली अहाँ देखा-देखा देब।"

जिनगीक अन्तिम अवस्थामे पतिपर जीत देख ढेंग सन देहकेँ उठा सरस्वती कीचेन दिस बढ़ली।

चाह बना शंकर कीचेनेमे पीबए लगला। मुदा तैयो गप-सप्प करैक मन किनको ने होइन। मनक सोग नव विषयकेँ मनमे अबै ने दैन। जहिना घी नइ अरघनिहारकेँ थारीमे देखते जीह ओकिऐ लगैत तहिना नव विचार अबिते जी-मन पचपचाए लगैन। चाह पीब दुनू गोरे कोठरीमे आबि फेर सोफेपर पड़ि रहला। गुम-सुम्म! जहिना साधक साधनामे लीन भऽ समाधिस्थ होइ छैथ तहिना दुनू गोरे अपन-अपन विचारक दुनियाँमे औनाए लगला।

सरस्वतीक नजैर पाँच बर्खक अवस्थापर पहुँचलैन। की छेलए माए-बापक राज..!

खेनाइ, खेलनाइ, पढ़नाइक संग पाबैनमे उपास केनाइ आ फूल तोड़ि पूजा केनाइ.., बस यएह छल जिनगी। मनमे सुख-दुखक जन्मो कहाँ भेल छल। सोहनगर वातावरणमे बिआह भेल। नैहरसँ सेवा करए नोकरनी आएल छल। सासुरो सम्पन्ने रहए। कथुक अभाव नहि। नोकरे पानियोँ भरै छल आ भानसो करै छल। अपनो प्रोफेसरे छला। पाइक संग प्रतिष्ठो बनौने छला। विद्यार्थीसँ शिक्षक धरिक बीच सम्मानित छला। अपनासँ बीसे बेटोक पढ़ैपर खर्च केलैन। आब जे महगाइ शिक्षामे आबि

गेल अछि तइसँ इमानदार कमेनिहारक धिया-पुता-ले शिक्षा असंभव भऽ गेल अछि। दरमाहासँ तँ नहियेँ मुदा पिताक देल सम्पैतसँ एते जरूर केलैन। अमेरिकामे बेटाकेँ पढ़ा लिलसा मेटौलैन। मुदा अखन की देखै छी? ऐ अवस्थामे दिन-राति तीन मंजिलापर उतरब-चढ़ब पार लगत? ओहिना तँ हाथ-पएर बिनबिनाइत रहैए। देह भारी बुझि पड़ैए। तैपर परिवारक सभ काज! ऐ उमेरमे बुढ़-कनियाँ बनि जीब रहल छी। ..तरे-तर सरस्वतीक देहसँ पसेना चलए लगलैन। अनासुरती मुहसँ निकललैन-

“ऐ जीवनसँ मरब नीक।”

पत्नीक बात सुनि शंकर कुमारक भक्क टुटलैन। अखन धरि चेतनाहीन भेल शंकरो अपन पैछला जिनगी देखै छला। गामक स्कूल...। केते सिनेहसँ पिताजी घरक देवताकेँ गोड़ लगा, कन्हापर चढ़ा ‘सरस्वती माताक जय’ कहि आँगनसँ निकैल सरस्वतीक मन्दिरमे लऽ गेल छला। की हम ओइसँ कम अपना बेटाकेँ केलौं? कथमपि नहि। डेरामे गाड़ल देवता तँ नइ अछि मुदा देवालमे टाँगल फोटो आ अष्टद्रव्यक बनौल मुरती तँ अछिए। बाड़ीक वसन्ती गुलाब तँ नहि, मुदा मह-मह करैत भकराड़ रूपमे बनल प्लास्टिकक फूल तँ चढ़ौनहि छिऐन। धुमन-सररक धूपक बदला गुगुल आ अगरबत्ती तँ चढ़ैबते छिऐन। मोटर-साइकिलपर चढ़ा शहरक सभसँ नीक विद्यालयमे पढ़ेबे केलिऐन। पिताजी जेतेक हमरा पढ़ौलैन आ एक सीमा धरि पहुँचा देलैन, तहिना तँ हमहूँ केलिऐन। नोकरी भेलापर ताधैर पत्नी गाममे रहली जाधैर बाबू-माए जीबैत रहला। मरितोकाल धरि माए संगे खाइले कहैथ। संगे तँ नहि खाइ, मुदा एकठाम बैस कऽ जरूर खाइ। मुदा बेटाकेँ जहिए-सँ कनभेन्टमे नाओं लिखेलौं तहिए-सँ एके शहरमे रहनौं फुट-फुट रहए लगलौं! समैयक संग शिक्षो बदलल। ..एकाएक शंकरक नजैर आगू बढ़ि अपन जिनगीक अवस्थापर पड़लैन। चारिम अवस्था। जइ अवस्थामे सभ कथूसँ सम्पन्न भऽ अभावकेँ निर्मूल-नष्ट कऽ परिवारसँ ऊपर उठि समाजमे मिलि जाएब होइ

छइ। हमर समाज केहेन? जइ समाजमे मनुखक संग-संग जीव-जन्तु, माटि-पानि, घर-दुआर धरि एक-दोसरकेँ नीक-अधला, सुख-दुखमे संग दैत अछि। जैठाम एकठाम बैस सभ भोज-काजमे खेबो करैए, दसगरदा उत्सवो हँसी-खुशीसँ मनबैए, ढोल-डम्फापर होरी गाबि-गाबि नचबो करैए, जुड़शीतलमे इनार-पोखैर उड़ाहबो करैए, शिव-पार्वती बना बजाक संग गामो घुमैए...। बेटाकेँ अमेरिकामे पढ़ेलौं। ओ ओइ समाज आ संस्कृतिमे तेना मिलि गेल जे अपन सभटा बिसैर गेल। आइ जँ हम अमेरिका जा रहए लागी तँ ओइठामक जिनगी दुनू बेकतीकेँ केतेक दिन जीबए देत? की दुनियाँमे मृत्यु छोड़ि हमरा सभ-ले किछु शेष नै बँचल अछि! ..प्रोफेसर शंकर कुमारक निराश मनमे एलैन 'करनी देखिहह मरनी बेर।' जिनगीमे केतए चूक भेल? जँ चूक नइ भेल तँ ऐ अवस्थामे पहुँच केना गेल छी?

पत्नीक बात 'ऐ जीवनसँ मरब नीक' सुनि धड़फड़ा कऽ उठि प्रोफेसर शंकर कुमार बजला-

"अखन सुतैबेर अछि जे सुति रहलौं?"

"सूतल कहाँ छी। भानस करैसँ मन असकताइत अछि।"

"तँ की भुखले रहब?"

शंकर कुमार बाजि तँ गेला मुदा मन पाछू घुमि कऽ तकलकैन। एक तँ ओहिना मरैक बाट धेने छी, तहूमे जे दस-बीस बर्ख जीबो करितौं से तेहेन रोग भेल जाइ छैन जे भुखले मरब। जँ खाएब नहि, तँ रातिमे नीन केना हएत? जँ नीन नइ हएत तँ जीब केतेक दिन?

पत्नी-

"केता-दिन कहलौं जे नोकर रखि लिअ?"

'नोकर' सुनि शंकर अमती काँटक ओझरीमे पड़ि गेला। देखैमे नान्हि-नान्हिटा मुदा छाँह जकाँ छोड़ैले तैयार नहि। मनमे जोर मारलकैन

जे अपने जिनगी भरि नोकरी केलौं। बेटो-पुतोहु–दुनू इंजीनियर–अनके नोकरी करैए आ अपने नोकर रक्खू। जहन ड्यूटी करै छेलौं, बेसी तलब उठबै छेलौं तहन नोकरे ने रखलौं। कारणो छल जे पत्नी थेहगर छेली आ बेटो-पुतोहुक आशा छल। सरस्वती थोड़े बुझै छेली जे बुढ़ाड़ी एहेन हएत। आइ-काल्हि नोकर केते महग भऽ गेल अछि से थोड़े बुझै छैथ। तकलीफ हेतैन तँ बजबे करती। भलेँ हमरा बुते पुरौल हुअए वा नहि। पहिले जकाँ पाँच-रूपैआ-दस-रूपैआमे नोकर भेटत? तहूमे बाल-बोधकेँ थोड़े रखि सकै छी। अनेरे लेनी-के-देनी पड़त। घरक सुख जहलमे भेटत। जँ सियान राखब तँ तीन हजारसँ कम लेत? तहूमे कि कोनो स्कूल-कौलेज आकि मिल-फैक्टरीक नोकरी हेतइ। घरमे काज करत तँ खाइले नै देबै से हएत? तहूमे नीक-निकुत बेसी वएह खाएत। तेहेन समय आबि गेल जे कहीं सम्पैते ने दुनू बेकतीक जानो लऽ लिअए! ..जानपर नजैर पड़िते शंकरक आँखि ढबढबाए लगलैन। जाने नइ तँ जहान की? ..जहिना वीणाक तार टुटलापर अवाज खनखना कऽ निकलै छै तहिना टुटल जिनगीक स्वरमे शंकर कुमार सरस्वतीकेँ कहलखिन-

“अहाँक मन असकताइत अछि तँ पड़ू। कहुना-कहुना कऽ क्षुधा तृप्त करै-जोकर अपनेसँ टभका लइ छी।”

मने-मन सरस्वती बजली-

“केना जीब?”

❑ साभार : अर्द्धांगिनी

कथाक्रम : पंचदेव (1-100)

सझिया खेती
सतभैंया पोखैर
दनियाँ डाबा
अर्जुन रोग
दोसराइत

उकड़ू समय
अवाक
कलंक : 1
बताहे बताह बनौलक
भैयारी हक

केकरा-ले केलौं
केकरो कियो ने
टुटली मरैया
बगबाइर
अपन मन अपन धन

एक धाप जमीन
भैयारी
साझी
सूदि भरना
सीमा-सरहद

चुनवाली
रेहना चाची
बुधनी दादी : 2
पुरनी नानी
एकबोलिया दादी

लछनमान
बिटगरहा
गलफूलू
लाही
पल भरि

छातीक हार
कोढ़िया सरधुआ
पहपैट
भोरक सपना
खोंटकर्मा

गपक पियाहुल लोक
धरमूदासक अखड़ाहा
हमरा नीक नहि लगैए
कर्ज : 1
आब नइ आगि लगैए?

घूर
एगच्छा आमक गाछ
प्रीगर शत्रु
दहेजुआ गाए
गठूलाक गारि

गण्डा
अब-तब
झूठे
उजगी
जेना हाथी रही

कनी हमरो सुनू
नोकरिहारा
अनका बेर ओंघी
लगबे ने कएल
ओ दिन

पान पराग
फोंक मकड़
झकास
ठोररंगू
हकार

ओझरी
दोती बिआह
कचहरिया रोग
नटकिया गति
भारीपन भार बनि गेल

दिन घटि गेल
पछताबा
परिवारक प्रतिष्ठा
पागलखाना
खाए चाहैए

गामे उपैट गेल
खतियाएल घर
किछु ने फुरैए
तिलकोरक तरुआ
पटोर

बेटाक चलैत
उग्रघारा
बेटीक कुभेला
दोहरी हाक
खिलतोड़

खटहा आम
बुधि-बधिया
एकता
उमेरक लेहाज
केते लग केते दूर : 1

जितिया पाबैन
धर्मक असल रूप
शिनीची सिनेह
नवान
असुध मन

महिरम
हाथक जिनगी
सिखबैक उपय
दनगर घास
ढकरपेँच

मुसरी आ घोड़ा
जाड़ फाटि गेल
मुँहक बात मुहेँमे
कनीटा बात
गोहिक शिकार

जारैनक दुख मेटा गेल
इज्जत उतैर गेल
चापाकलक पाइप
घसवाहि
चटवाह

दुरकाल
गामक कटान
मेटाइत जिनगी
कपटी मित
अजाति

परदेशी बेटी
घरदेखिया
ऊँच-नीच
ऑपरेशन
फेर पुछबैन

समधीन
कनमन
नमहर घरक चोइर
पटोटन
पुरुषार्थ

पेटगनाह
गंगा नहेलौं
बकठाँइ
गुलेती दास
खर्च

डीहक बटबारा
मूलधन
छूआ
लफ साग
नहरकन्हा

डॉक्टर हेमन्त
मनुखक मूल्य
तीन जुगिया भाय
आश्रम नहि सोभाव बदली
मायराम

अपन सन मुँह
पाप आ पुण्य
चोरक चोरबती
मातृभूमि
कटा-कटी

शुभचिन्तक
विधवा बिआह
वैष्णवी भगवती
प्रेमी
शंका

हरदीक हरदा
बेरपर
झगड़ाउ-झोटैला
फॉगु
बुड़िबकहा बुड़िबक बनौलक

मुइलो बिसेबैन
प्रतिभा
केतौ नै
हमर कोन दोख
असगरे

उलबा चाउर
पतझाड़
धरम काँट
तिलासंक्रान्तिक लाइ
कठफल

असहाज	बेटीक लिलसा
बाबा बेलेश्वरनाथ	पुरान साड़ी
भोँटक गहमी	अभिनव अनुभव
जेतए जे हौउ	अड़िकट्टा चोर
नौमीक हकार	उझट बात
एकतीस मार्च	बहिन
अगिलह	मर्माहत
स्वर्ग आ नर्क	अलपुरिया बरी
पीरारक फड़	दुधियाएल बरखा
मनकेँ फुसलबै छी	चोरूक्का झगड़ा
अकास दीप	त्राहि-कृष्ण
माघ नहाइले जाएब	संकट
अतहतह	काँच सूत
चौरचनक दही	बीरांगना : 2
तेतर भाइक कविता	सोग
अपन रोपल गाछी भुताहि	विघटन
डभियाएल गाम	बगदल गाम
अखरा-दोखरा	कलंक
गाछपर सँ खसला	उनटन
सोनाक सुइत	विद्वताक मद

क्रान्तियोग	अनेरुआ बेटा
पाही पट्टी	कछमछी
गोहाइर	समदाही
मरियाएल मन	वारंट
मदैत नै चाही	एकाग्रचित
बोनिहारिन मरनी	गलगर भैंस
आशापर पानि पड़ल	प्रवल इच्छा
बुढ़िया दादी	अधखरूआ
बाबी	मोहरा
बुधनी दादी : 1	भँसियाएल बाल-बोध
क्रियाशील	दूटा पाइ
समझौता	अपने केलहा
रत्न गमेवाक दुख	समुद्री विद्या
भाइक सिनेह	बीरांगना : 1
हारि	अनुशासन
जाम	बिहरन
विदाइ-दैछना	हारि-जीत : 1
टाइपिस्ट	अपसोच
गजपट खेती	अपन पुरखाक डीह
सुआद	खलओदार

पढ़ल सुगा बौक
गेल माघ उनतीस दिन बाँकी
मान
बालमण्डली
नीक बोल

कियो ने
स्वरोजगार
झिसीक मजा
लतियाएल जिनगी
सजमनियाँ आम

त्रिकालदर्शी
सड़ल दारीम
बटखौक
स्मृति शेष
बिसवास

हाथी आ मूस
गामक बान्ह
पनचैती
भबडाह
दूरी

गामक मुँह फेर देखब
गुड़ा-खुद्दीक रोटी
चौकीदारी
देव उठान
अनदिना

सुमति
आशापर पानि फेर गेल
चर्मरोग
केतौ ने रहलौं
मुँह-कान

बाबाक बाग-बगिया
पुरस्कार
फुसियाह
गामक सुरता
कचोट

जेकर चुन तेकर पुन
एते दिन अपना-ले आब अनका-ले
रमैत जोगी बोहैत पानि
पनचैती पनपना गेल
जेठुआ गरदा

खसैत गाछ
केते लग केते दूर : 2
कुघाटक मृत्यु
ओऽ होऽ होऽ हूसि गेल
मुड़ियाएल घर

उचितवक्ता
हारि-जीत : 2
हँसीएमे उड़ि गेलौं
मनोरथ
धरती-अकास

विचार हेरा गेल
घर तोड़ि देलिऐ
आजुक जिनगीक आइ परीछा
दोहरी मारि
धुर बुड़ि तोरा बजै ने अबै छौ!

डकरा हाल
सीरक गाछ
परतीहा खढ़
गरदैन कट्टा बेटा
कर्जखौक

सुरता
सगहा
पकिया चेला
अनगढ़ चेतना
धोतीक मान

चुप्पा पाल
जन्मतिथि
दियरबा-भैंसुर
फज्झैत
भुतलग्गू आकि भविसलग्गू

सिरमा
मनुखदेवा
अप्पन-बीरान
सुभिमानी जिनगी
मरूभूमि

मइटुग्गर
आने जकाँ
उमकी
मुँहक खतियान
ओसार

सरोजनी
सुभद्रा
देखल दिन : 1
पड़ाइन
चास-बास दुनू गेल

बेटी हम अपराधी छी
भोलानाथ बाबा
घटक बाबा
इजोरिया राति
भँसैत नाह

शम्भुदास
शिवजीक डाक-बाक्
सजाए
छुटि गेल
कनफुसकी

फाँसी
गति-मुक्ति
बजन्ता-बुझन्ता
अप्पन हारि
कोसलिया

मुसहैन
बिसाँढ़
मत्हानि
तेरहो करम
बात-कथा सुनौलक

बेटीक पैरुख
गैत-वीध
बेवहारिक
ठका गेलौं
साए कच्छे

करिछौन लाली
बलजोर
गति-गुद्दा
कलम हानि कऽ
अकाल

भैंटक लावा
डंका
काल्हि दिन
इमानदार घूसखोर
सनेस : 1

बेर परहक भदवा

केलवाड़ी

हँसैत लहास

बलधकेल कटौज

कान फुटल कप

सड़क-कातक खेत

सनेस

छोटका काका

कुकुरपन

हमर बाइनिक विचार

आइ एम शॉरी

देखल दिन : 2

मेकचो

कामिनी

संगी

ठकुआएल भुसवा

बपौती सम्पैत

दादी-माँ

कचहरिया भाय

एक दिन

५-५ टा कथाक १०० संग्रहक ई पंचदेव शृंखला मैथिलीमे पॉकेट-बुक्सक कमीकें पूर्ण करत। जतेक पन्ना, ततेक दाम, मोटामोटी दस-दस पन्नाक कथा। से पढ़ैयोमे सुभितगर आ कीनैयोमे सस्ता। एक उखड़ाहामे एकटा पॉकेट बुक्स खतम भऽ सकए, से साएगो पोथी साए उखड़ाहाक खोराकी भेल। श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संसारसँ बीछल ऐ सभ रचनाक विषय-वस्तु अहाँक सामाजिक ज्ञानकें मोनो पाड़त आ बढ़ेबो करत आ अहाँकें सामाजिक प्राणी हेबाक बोधो कराएत। अहाँकें अधिकारक संग कर्तव्यक स्मरण कराएत, सरोकारी बनाएत। आ ई सभ मनोरंजनक संग भेटत। मैथिलीक ई पहिल पॉकेट-बुक्स सीरीज स्वागत योग्य अछि। -**गजेन्द्र ठाकुर**

जगदीश प्रसाद मण्डलजीक रचना संसार : 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन, 26. पंगु, 27.आमक गाछी- उपन्यास। 28. कल्याणी, 29. सतमाए, 30. समझौता, 31. तामक तमघैल, 32. बीरांगना- एकांकी। 33. तरेगन, 34. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 35. शंभुदास, 36. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 37. गामक जिनगी, 38. अर्द्धांगिनी, 39. सतभैंया पोखैर, 40. गामक शकल-सूरत, 41. अपन मन अपन धन, 42. समरथाइक भूत, 43. अप्पन-बीरान, 44. बाल गोपाल, 45. भकमोड़, 46. उलबा चाउर, 47. पतझाड़, 48. लजबिजी, 49. उकड़ू समय, 50. मधुमाछी, 51. पसेनाक धरम, 52. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 53. फलहार, 54. खसैत गाछ, 55. एगच्छा आमक गाछ, 56. शुभचिन्तक, 57. गाछपर सँ खसला, 58. डभियाएल गाम, 59. गुलेती दास, 60. मुड़ियाएल घर, 61. बीरांगना, 62. स्मृति शेष, 63. बेटीक पैरुख, 64. क्रान्तियोग, 65. त्रिकालदर्शी, 66. पैंतीस साल पछुआ गेलौं, 67. दोहरी हाक, 68. सुभिमानी जिनगी, 69. देखल दिन, 70. गपक पियाहुल लोक, 71. दिवालीक दीप, 72. अप्पन गाम- लघु कथा संग्रह।

₹ 50



पल्लवी प्रकाशन
जे.एल.नेहरू मार्ग, तुलसी भवन
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

